विश्व पर्यावरण दिवस

नमामि गंगे पत्रिका
अंक 24 । जून- जुलाई 2021

गंगा दशहरा

गंगा क्वेस्ट 2021 समापन समारोह – 20 जून 2021

सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन

जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग
भारत सरकार

NAMAMI GANGE Magazine
Vol-24 | June-July 2021

जय जय गंगे...
तेरा कर्ज़ चुकाना है हमको, कर्त्तव्य निभाना है हमको
हम तुझसे लेते आए हैं, अब तेरी पीड़ा हरनी है
नहीं रूकेंगे, हम स्वच्छ करेंगे...

नमामि गंगे पत्रिका
अंक 24 । जून-जुलाई 2021

स्वागतम

श्री प्रहलाद सिंह पटेल
माननीय राज्य मंत्री

श्री विश्वेश्वर टुडु
माननीय राज्य मंत्री

श्री प्रहलाद सिंह पटेल, माननीय राज्य मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय एवं **श्री विश्वेश्वर टुडु**, माननीय राज्य मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय ने दिनांक 8 जुलाई, 2021 को जल शक्ति मंत्रालय में अपने नए कार्यभार संभाले। इस दौरान श्री प्रहलाद सिंह पटेल, माननीय राज्य मंत्री एवं **श्री विश्वेश्वर टुडु**, माननीय राज्य मंत्री ने **श्री गजेंद्र सिंह शेखावत**, माननीय जल शक्ति मंत्री के कार्यालय में औपचारिक रूप से भेंट की और **श्री पंकज कुमार सचिव** जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग, भारत सरकार ने उनका विधिवत स्वागत किया।

माननीय राज्य मंत्रियों का स्वागत तथा नमामि गंगे कार्यक्रम की समीक्षा– दिनांक 10 जुलाई, 2021 को श्री गजेंद्र सिंह शेखावत माननीय जल शक्ति मंत्री की अध्यक्षता में श्री प्रहलाद सिंह पटेल माननीय राज्य मंत्री एवं **श्री विश्वेश्वर टुडु**, माननीय राज्य मंत्री ने राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के अधिकारियों के साथ मिलकर नमामि गंगे कार्यक्रम की समीक्षा की। इस अवसर पर श्री राजीव रंजन मिश्रा, महानिदेशक, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन और कार्यकारी निदेशकों द्वारा माननीय मंत्रीगण का स्वागत किया गया और राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन की टीम का परिचय भी कराया गया। इस अवसर पर श्री पंकज कुमार, सचिव, जल शक्ति मंत्रालय समीक्षा बैठक में उपस्थित रहे। श्री राजीव रंजन मिश्रा, महानिदेशक, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन ने माननीय मंत्रीगण को राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन द्वारा क्रियान्वित किए जा रहे नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत गंगा पुनरुद्धार की गतिविधियों से अवगत कराया।

नमामि गंगे की समीक्षा बैठक

नमामि गंगे पत्रिका संग्रह का विमोचन

श्री गजेंद्र सिंह शेखावत, माननीय जल शक्ति मंत्री ने श्री राजीव रंजन मिश्रा, महानिदेशक, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन की उपस्थिति में नमामि गंगे पत्रिका के दो संग्रहों का दिनांक 23 जुलाई, 2021 को अनावरण किया। इन संग्रहों में नमामि गंगे पत्रिका के 20 संस्करण एक साथ एकत्रित किए गए हैं जिससे कि पाठकों को गंगा के बारे में और गंगा पुनरुद्धार के लिए की जा रही परियोजनाओं का विस्तृत ब्यौरा मिलेगा। इस अवसर पर श्री रोजी अग्रवाल, कार्यकारी निदेशक और सम्पादक मंडल की टीम भी उपस्थित रही।

इन संग्रहों को ऑनलाइन पढ़ने के लिए कृपया नीचे दिए हुए लिंक पर जाएं

https://nmcg.nic.in/Newsletter/compendium/vol1/index.html
https://nmcg.nic.in/Newsletter/compendium/vol2/index.html

इस अंक में...

अंक 24, जून-जुलाई 2021

6-7 गंगा दशहरा 2021

8-9 अतुल्य गंगा यात्रा

14-15 गंगा नदी में शैवाल की खबरें

18-19 Ganga Quest- 2021- Felicitation of Winners

20-21 जायका गंगा किनारे वाला

28-29 Financing Namami Gange

24-25 नदी पुनरुद्धार एवं पर्यावरण संरक्षण

35 आपका प्यार, आपके सुझाव

नमामि गंगे पत्रिका
अंक 24
जून–जुलाई 2021

संपादकीय मंडल

राजीव रंजन मिश्रा
महानिदेशक, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन
मुख्य संपादक

रोज़ी अग्रवाल
कार्यकारी निदेशक (वित्त), वरिष्ठ संपादक

बिनोद कुमार
निदेशक (परियोजना), सह संपादक

संजम चीमा
मीडिया संपादक

पीयूष गुप्ता
तकनीकी संपादक

प्रियंका झा
गतिविधि संपादक

ज्योति वर्मा
परियोजना समन्वयक संपादक

कृतिका मदान
रचनात्मक एवं सोशल मीडिया संपादक

मोहित शर्मा
मीडिया एवं संकलन संपादक

अथर्व राज
संकलन संपादक

राजेश कुमार
डिजाइन विकास विशेषज्ञ

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन
जल शक्ति मंत्रालय
भारत सरकार द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
जैना ऑफसेट प्रिंटर्स
4593/15 अग्रवाल लेन, अंसारी रोड, दरियागंज–110002

संपादकीय...

प्रिय पाठकों,

यह हम सब के लिए बेहद खुशी की बात है कि देश में कोरोना महामारी के संकट के बादल कुछ हद तक छंटते हुए दिखाई दे रहे हैं और व्यावसायिक एवं आर्थिक गतिविधियाँ भी गति पकड़ने लगी है। लेकिन इन सब बढ़ती गतिविधियों के बीच हमें अभी भी बहुत सावधानी रखने की आवश्यकता है क्योंकि इस महामारी का अभी पूरी तरह अंत नहीं हुआ है और अगर हमारी असावधानी बढ़ी तो हालात फिर बिगड़ सकते हैं। इसीलिए हमें अपने जीवन और जीविका के साधनों को बहुत सावधानी बरतते हुए आगे बढ़ाना चाहिए।

मुझे यह बताते हुए बेहद खुशी है कि नमामि गंगे की सभी परियोजनाओं पर सुचारू रूप से कार्य प्रारंभ हो गए हैं और सम्पूर्ण सावधानियों के साथ निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। गंगा में प्रदूषण रोकथाम के लिये हमारी कई परियोजनाएं समय से पूर्ण हो गई और परीक्षण में चल रही हैं। इन्हें शीघ्र ही विधिवत रूप से शुरू कर के देश और गंगा को समर्पित कर दिया जाएगा। गंगा बेसिन के संपूर्ण संरक्षण और प्रदूषण रोकथाम के लिए हमने अब गंगा की सहायक नदियों पर भी काम प्रारंभ कर दिए हैं और विशेषतः यमुना, काली, दामोदर, कोसी, सरयू आदि पर कार्य चल रहे हैं या शुरू होने को हैं। इस श्रृंखला में हमने हाल ही में उत्तराखंड में कुमाऊँ क्षेत्र के उधम सिंह जिले की छह नदियों में प्रदूषण रोकथाम की व्यापक परियोजना को स्वीकृति दी है जिसके परिणामस्वरूप उत्तराखंड में गंगा और साथ–साथ इसकी सहायक नदियों का भी पुनरुद्धार हो सकेगा और इस पूरे प्रदेश की नदी पारिस्थितिकी में वृहद रूप से सुधार होगा।

जैसा कि आप को विदित है गंगा क्वेस्ट 2021 में हमने आप सब को गंगा से जोड़ने में अपार सफलता पायी और आपने अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ मिलकर इस प्रतियोगिता का आनंद लिया। हमारे विजेताओं को ना सिर्फ आकर्षक पुरस्कार मिले बल्कि उन्हें माननीय जल शक्ति मंत्री के साथ वार्तालाप करने का भी अवसर प्राप्त हुआ और गंगा की सफाई का नारा जन–जन तक पहुँचाने का प्रण भी लिया। हम ऐसे ही जन चेतना के मनोरंजक कार्य शीघ्र ही आप के लिए लेकर हाजिर होंगे। अगस्त माह से हम आपके प्रिय कार्यक्रम 'रग–रग में गंगा सीजन 2' के साथ भी प्रस्तुत होंगे।

यह हमारे लिए बहुत खुशी की बात है कि हमारे विभिन्न हितधारक एवं सहयोगी संगठन लगातार बिना रुके और विशेष कर बिना महामारी की चिंता किए हुए भी बहुत ही व्यापक रूप से जन–जागरण के कार्यक्रम निरंतर गंगा क्षेत्रों में करते दिखाई दे रहे हैं और हर एक को गंगा सफाई अभियान से जोड़ने में लगे हुए हैं। जुलाई माह में खास कर गंगा के किनारे बसे क्षेत्रों में व्यापक रूप से वृक्षारोपण के कार्यक्रम दिखाई दिए जिसमें ना सिर्फ गणमान्य व्यक्तियों ने पौधारोपण किया बल्कि विभिन्न वर्गों से जन मानस विशेषकर बच्चों और युवाओं ने गंगा को हरा भरा करने के प्रयासों में उत्साह से योगदान किया।

नमामि गंगे कार्यक्रम तेजी से सफलता के नए आयाम लिख रहा है और सरकारी और गैर सरकारी संगठनों और अनेक हितधारकों के साथ मिलकर इस कार्यक्रम के अन्तर्गत गंगा के संपूर्ण विकास, इसकी अविरलता और निर्मलता एवं नदी पारिस्थितिकी में सकारात्मक बदलाव लाने के हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों की सफलता इस तथ्य से आंकी जा सकती है कि जहाँ पिछले दो दशकों में कुल 4,000 करोड़ रुपये गंगा सफाई में खर्च हुए, वहीं 2015 से मात्र 6 वर्षों में नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत 10,000 करोड़ रुपये से भी अधिक का उपयोग कर कई परियोजनाओं में कार्य किये गए हैं। यह पूर्ण रूप से दर्शाता है कि हर ओर परियोजनाएं जमीनी स्तर पर सफलतापूर्वक क्रियान्वित हो रही हैं। हाँ, इस सफर में कुछ चुनौतियाँ समय–समय पर उठती रहती है जिन्हें हम विभिन्न सरकारी विभागों के साथ मिलकर हल करने में कामयाब हो रहे हैं। यह मिशन हर तरह से सहकारी संघवाद और चौतरफा सहयोग का एक अनूठा उदाहरण के रूप में उभर कर सामने आया है।

आप गंगा उत्थान के अथक प्रयासों की कुछ झलकियां हमारी पत्रिका के 24वें संस्करण में देख पायेंगे जो हम आप सब के सम्मुख पेश कर रहे हैं। हमें विश्वास हैं कि इन सब प्रयासों को देख और जानकर आप भी हमारे साथ इस महाअभियान में अवश्य जुड़ना चाहेंगे और गंगा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता सुनिश्चित करेंगे। आइए हाथ बढायें और प्रण लें कि – गंगा को अब स्वच्छ करेंगे, नहीं रुकेंगे, नहीं थमेंगे।

आप अगर हमारे साथ जुड़ना चाहते है और अपने सुझाव हमसे साझा करना चाहते हैं तो हमें https://nmcg.nic.in/ebookFeedback.aspx पर अवश्य संपर्क करें।

जय हिंद
जय गंगे

राजीव रंजन मिश्रा
महानिदेशक, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन
Email: dg@nmcg.nic.in

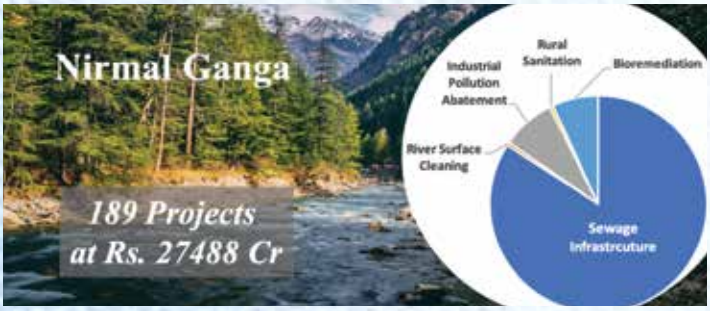

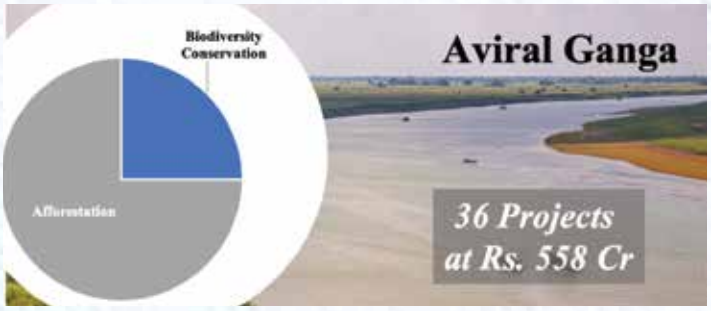

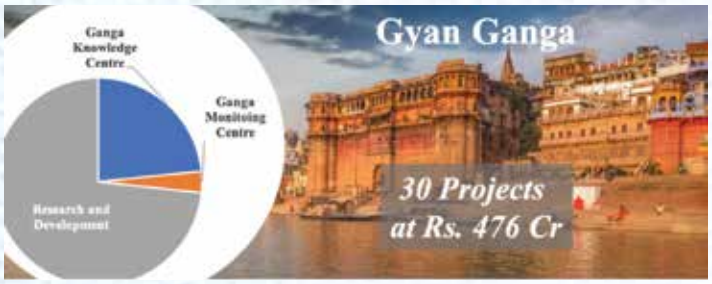

The Executive Committee of National Mission for Clean Ganga in its 36th Meeting chaired by Shri Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG on 16th July, 2021 and attended by Shri Manoj Sethi, JS & FA, DoWR, RD & GR and Senior Officers of NMCG and the State Authorities sanctioned a project for Interception and Diversion (I&D) and STP works for 6 Polluted Stretches on rivers Bhela, Dehla, Kichha, Kosi, Nandhore, Pilakhar and Kashipur in District Udham Singh Nagar, Uttarakhand under 'Namami Gange Program'. These projects involving a cost of Rs. 199.63 Crores are aimed at abatement of pollution in tributaries of Ganga in the state of Uttarakhand where all projects on the main stem of Ganga have been completed preventing any discharge of un-treated water in Ganga.

The 36th meeting of Executive Committee of NMCG in progress on 16th July, 2021

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2021

गंगा किनारे से योग पर रिपोर्ट

योग एक प्राचीन भारतीय जीवन–पद्धति है। जिसमें शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाने (योग) का काम होता है। योग के माध्यम से शरीर, मन और मस्तिष्क को पूर्ण रूप से स्वस्थ किया जा सकता है। तीनों के स्वस्थ रहने से आप स्वयं को स्वस्थ महसूस करते हैं। योग के जरिए न सिर्फ बीमारियों का निदान किया जाता है, बल्कि इसे अपनाकर कई शारीरिक और मानसिक तकलीफों को भी दूर किया जा सकता है। योग प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाकर जीवन में नव–ऊर्जा का संचार करता है। योगा शरीर को शक्तिशाली एवं लचीला बनाए रखता है साथ ही तनाव से भी छुटकारा दिलाता है। योग आसन और मुद्राएं तन और मन दोनों को क्रियाशील बनाए रखती हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस प्रतिवर्ष 21 जून को मनाया जाता है। पहली बार यह दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया, जिसकी पहल भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने 27 सितम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण से की थी, उन्होंने कहा था *''योग भारत की प्राचीन परम्परा का एक अमूल्य उपहार है यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है, मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है, विचार, संयम और स्फूर्ति प्रदान करने वाला है तथा स्वास्थ्य और भलाई के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को भी प्रदान करने वाला है। यह व्यायाम के बारे में नहीं है, लेकिन अपने भीतर एकता की भावना, दुनिया और प्रकृति की खोज के विषय में है। हमारी बदलती जीवन– शैली में यह चेतना बनकर, हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकता है''*, इसके बाद **21 जून को ''अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस''** घोषित किया गया। 11 दिसम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र के 177 सदस्यों द्वारा 21 जून को ''अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस'' को मनाने के प्रस्ताव को मंजूरी मिली। माननीय प्रधानमन्त्री के इस प्रस्ताव को 90 दिन के अन्दर पूर्ण बहुमत से पारित किया गया, जो संयुक्त राष्ट्र संघ में किसी दिवस प्रस्ताव के लिए सबसे कम समय है।

हर साल योग दिवस की नई थीम तय की जाती है. इस साल की थीम **''बी विथ योग, बी ऐट होम''** यानी योग के साथ रहें, घर पर रहें। 7वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर अपने संबोधन में पीएम मोदी ने कहा– ''जब भारत ने संयुक्त राष्ट्र में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का प्रस्ताव रखा था, तो उसके पीछे यही भावना थी कि ये योग विज्ञान पूरे विश्व के लिए सुलभ हो। आज इस दिशा में भारत ने विश्व स्वास्थ्य संगठन, संयुक्त राष्ट्र के साथ मिलकर एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया है। अब विश्व को, एम–योगा ऐप की शक्ति मिलने जा रही है। इस ऐप में कॉमन योग प्रोटोकॉल के आधार पर योग प्रशिक्षण के कई विडियोज दुनिया की अलग अलग भाषाओं में उपलब्ध होंगे''।

योग दिवस पर नमामि गंगे के हितधारकों की गतिविधियां

नेहरू युवा केन्द्र संगठन

बिहारः नेहरू युवा केन्द्र संगठन, बिहार (पटना) द्वारा युवाओं की सहभागिता के अंर्तगत नमामि गंगे परियोजना में बिहार राज्य के पाँच जिला पटना, भागलपुर, मुंगेर, वैशाली और बक्सर के द्वारा राज्य निदेशक के नेतृत्व में राज्य परियोजना सहायक, जिला युवा अधिकारी, जिला परियोजना अधिकारी, राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक, गंगादूत एवं अन्य समाजसेवियों, युवाओं, बच्चे एवं अन्य लोगों के द्वारा परियोजना क्षेत्र के सभी 241 गांव में लोगों ने सोशल डिस्टेंसिंग को ध्यान में रखते हुए योग किया।

उत्तरप्रदेशः उत्तरप्रदेश के 17 जनपद–बिजनौर, मेरठ, बुलंदशहर, मुजफ्फरनगर, कन्नौज कानपुर नगर, उन्नाव, फतेहपुर, रायबरेली, प्रतापगढ़, प्रयागराज, मिर्जापुर, वाराणसी, गाजीपुर एवं बलिया में गंगा के पावन तट के साथ साथ चयनित गंगाग्राम में युवाओं के द्वारा कोविड–19 के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए योग किया गया ।

राज्य परियोजना प्रबन्धन ग्रुप (एसपीएमजी) द्वारा किए गए योगाभ्यास की झलकियां

राज्य परियोजना प्रबन्धन ग्रुप, नमामि गंगे, झारखंड के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर पब्लिक हेल्थ सेंटर बोरियो (साहिबगंज), पब्लिक हेल्थ सेंटर बरहैत (साहिबगंज), नगर परिषद रामगढ़,नगर परिषद बोकारो व अन्य जगहों पर योगाभ्यास किया गया।

ढाका गांव, वाराणसी, उत्तर प्रदेश में योग सत्र और स्वच्छता प्रतिज्ञा

सरसौल गांव, वाराणसी, उत्तर प्रदेश में योग सत्र

डोमरी गांव, वाराणसी, उत्तर प्रदेश में योग

चंडी घाट, हरिद्वार, उत्तराखंड में योग सत्र

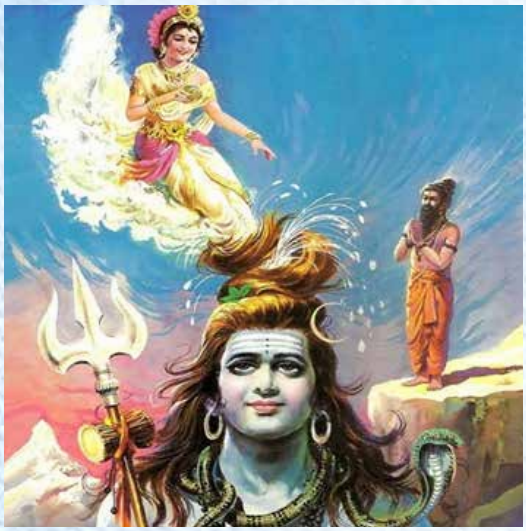

दुनिया की सबसे पवित्र नदियों में से एक है गंगा । समस्त संस्कारों में उसका होना आवश्यक है पंचामृत में भी गंगा को एक अमृत माना जाता है। अनेक पर्वो और उत्सवों का गंगा से सीधा संबंध है। उनमें से एक है गंगा दशहरा–सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा जी के कमंडल से राजा भागीरथ द्वारा देवी गंगा को धरती पर अवतरण दिवस को गंगा दशहरा के रूप में जाना जाता है। जिस दिन, मां गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई यह बहुत ही अनूठा और भाग्यशाली मुहूर्त था। वह ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि थी। ज्येष्ठ मास शुक्ल पक्ष दशमी तिथि, बुधवार का दिन, हस्त नक्षत्र, गर करण, आनंद योग, व्यतिपात योग, कन्या राशि का चंद्रमा, वृषभ राशि का सूर्य इन दशों के योग में जो मनुष्य गंगा में स्नान करता है वो सब पापों मे छूट जाता है और शुभ फल की प्राप्ति होती है। यू तो साल भर गंगा घाट पर मां गंगा की पूजा –अर्चना और स्नान के लिए हजारों लोग आते है, लेकिन गंगा दशहरा के दिन गंगा में डुबकी लगाने का विशेष महत्व माना जाता है। इस दिन व्रत करने का विशेष महत्व है।

हमें समझने की आवश्यकता है कि गंगा केवल जलधारा ही नहीं अपितु जनजीवन और लोक–संस्कृति का अभिन्न अंग और जन–जन

गंगा दशहरे के अवसर पर नमामि गंगे के

नेहरू युवा केन्द्र संगठन

नेहरू युवा केन्द्र संगठन, बिहार के नेहरू युवा केन्द्र, पटना जिले में गंगा दशहरा के उपलक्ष्य में गंगा के अवतरण दिवस पर गंगा घाट पर प्रणाम मुद्रा में उनकी वंदना की गई। साथ ही पौधारोपण किया गया। उत्तरप्रदेश के नेहरू युवा केन्द्र, बुलंदशहर के गंगा ब्लॉक डिवाई के राष्ट्रीय युवा सेवक श्री कपिल कुमार के द्वारा विभिन्न संस्थाओं और गंगा दूतों के सहयोग से गंगा गांव कर्णवास में पूजन कर विशाल गंगा आरती की। उत्तर प्रदेश के नेहरू युवा केन्द्र, रायबरेली द्वारा गंगा दशहरा के अवसर पर युवा नौनिहाल बच्चों के साथ मिलकर पौधारोपण किया गया। उत्तराखण्ड के नेहरू युवा केन्द्र, चमोली जिले में गंगा दशहरा के पावन अवसर पर प्रभात फेरी आयोजित की गयी। पश्चिम बंगाल के हुगली जिले ने गंगा दूतो और गांव वालों के साथ गंगा दशहरा के उपलक्ष्य में गंगा पूजा किया। गंगादूतो ने मछुआरों और केवट चलाने वाले लोगों को भी गंगा साफ रखने के लिये प्रोत्साहित किया।

गंगा मित्र

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन की महती परियोजना नमामि गंगे के अंतर्गत महामना मालवीय गंगा शोध केंद्र,बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में गंगा मित्रों द्वारा गंगा दशहरा के इस अवसर पर गंगा घाट के किनारे जाकर घाट पर दूर–दराज से आये स्नानार्थियों एवं श्रद्धालुओं को गंगा की स्वच्छता को बनाए रखने का संदेश दिया गया। साथ ही घाटों पर जाकर स्वयं साफ सफाई करते हुये सभी लोगों से कूड़े को कूड़ेदान में ही डालने हेतु जागरूक किया गया एवम् गंगा स्वच्छता हेतु शपथ दिलाई गई। गंगा दशहरा के शुभ अवसर पर महामना मालवीय गंगा शोध केंद्र बीएचयू वाराणसी गंगामित्रों की टोली ने गंगा स्वच्छता अभियान एवं पर्यावरण रैली भी निकाली।

की भावनात्मक आस्था का आधार भी है। गंगा दशहरा के दिन भक्त देवी गंगा की पूजा करते है और गंगा में डुबकी लगाते हैं। और दान–पुण्य उपवास भजन और गंगा आरती का आयोजन करते हैं। मान्यता है इस दिन मां गंगा की पूजा करने से भगवान विष्णु की अनंत कृपा प्राप्त होती है। भक्त ऋषिकेश, हरिद्वार, प्रयाग और वाराणसी में ध्यान लगाने और पवित्र स्नान करने के लिए आते है। इस बार 20 जून दिन रविवार को गंगा दशहरा का पावन पर्व मनाया गया। आमतौर पर यह त्यौहार निर्जला एकादशी से एक दिन पहले मनाया जाता है।

भविष्य पुराण में लिखा हुआ है कि जो मनुष्य इस दशहरा के दिन गंगा के पानी में खड़ा होकर दस बार इस श्लोक को पढता है चाहे वो दरिद्र हो, चाहे असमर्थ हो वह भी प्रयत्नपूर्वक गंगा की पूजा कर उस फल को पाता है। स्कंद पुराण का कहा हुआ दशहरा नाम का गंगा श्लोक और उसके पढ़ने की विधि – सब अवयवों से सुंदर तीन नेत्रों वाली चतुर्भुजी जिसके कि चारों भुज, रत्नकुंभ, श्वेतकमल, वरद और अभय से सुशोभित है, सफेद वस्त्र पहने हुई है। मुक्ता मणियों से विभूषित है, सौम्य है, अयुत चंद्रमाओं की प्रभा के सम सुख वाली है, निरंतर करुणार्द्रचित्त है, भूपृष्ठ को अमृत से प्लावित कर रही है, दिव्य गंध लगाए हुए है त्रिलोकी से पूजित है, सब देवों से अधिष्ठित है, दिव्य रत्नों से विभूषित है, दिव्य ही माल्य और अनुलेपन है, ऐसी गंगा के पानी में ध्यान करके भक्तिपूर्ण मंत्र से अर्चना करे।

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन ने 20 जून को श्रमदान और गंगा आरती जैसे कार्यक्रमों के साथ गंगा दशहरा उत्सव हर्ष और उल्लास से मनाया। पटना, हरिद्वार, प्रयागराज, वाराणसी और अन्य गंगा शहरों के घाटो पर भी इस तरह की गतिविधियों का आयोजन कोविड नियमावली व सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए किया गया एवं गंगा स्वच्छता व संरक्षण के प्रति शपथ लेते हुए गंगा के लिए अपनी प्रतिबद्धता भी सुनिश्चित की गई ।

हितधारकों द्वारा जन–जागरण के कार्यक्रम

राज्य परियोजना प्रबन्धन ग्रुप

गंगा दशहरा के अवसर पर राज्य परियोजना प्रबन्धन ग्रुप द्वारा झारखंड में भैरवी नदी घाट रजरप्पा मंदिर के पास गंगा आरती की गई। तथा बोकारो में दामोदर घाट पर नगर परिषद अधिकारियों द्वारा श्रमदान पौधारोपण एवं गंगा आरती की गई। **नमामि गंगे उत्तराखण्ड** में सूचीबद्ध 3 विश्वविद्यालय 23 महाविद्यालयों के साथ मिलकर वर्चुअल माध्यम से गंगा क्विज, पेंटिंग प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, गंगा शपथ एवं गंगा स्वच्छता सम्बन्धित कार्यक्रम, सूचना शिक्षा एवं संचार गतिविधियों का आयोजन किया गया तथा स्वामी विवेकानंद राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय लेहघाट में गंगा दशहरा पर एक संगोष्ठी एवं क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

भारतीय वन्यजीव संस्थान

गंगा दशहरा के इस अवसर पर भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा गंगा प्रहरी के सहयोग से झारखण्ड साहिबगंज जिले में फलों के पेड़ लगाए गए और बाल गंगा प्रहरी और शिक्षकों को पर्यावरण के संरक्षण के लिए वृक्षारोपण के महत्व के बारे में जागरूक किया गया। वाराणसी उत्तरप्रदेश के दशाश्वमेध घाट पर छह गंगा प्रहरियो ने गंगा नदी की सफाई और टिकाऊ कूड़ेदानों के उपयोग के बारे में बताते हुए नाविकों, पर्यटकों और फूल वाले दुकानदारों को जागरूक किया। जागरूकता गतिविधि के दौरान राज्य वन विभाग के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

मुंडमाल अतुल्य

माँ गंगा की निर्मलता और अविरलता के लिए एक ऐतिहासिक, भव्य और अतुलनीय प्रयास, ''अतुल्य गंगा अभियान'' से आपका परिचय कराना चाहता हूँ। माँ गंगा में प्रदूषण से व्यथित कुछ सैनिकों ने अतुल्य गंगा के मुख्य उद्देश्य के रूप में, गंगा परिक्रमा की संकल्पना की। इस कार्य में भारतीय सेना के तीन अलंकृत अधिकारियों ने सेवनिवृत्ति के बाद अतुल्य गंगा की स्थापना में मुख्य भूमिका निभाई है। ये सैनिक हैं– लेफ्टिनेंट कर्नल हेम लोहमी, जो एक प्रतिष्ठित पर्वतारोही हैं और जिन्होंने अंटार्कटिका में भारत के पहले दो स्थायी वैज्ञानिक केंद्रों (दक्षिण गंगोत्री और मैत्री) की स्थापना की थी, सैन्य अभियंता श्री गोपाल शर्मा जो एक विख्यात पर्वतारोही हैं और हिमालय की हर एक चोटी पर तिरंगा फहरा चुके हैं और कर्नल मनोज केश्वर, जो विश्व के 40 देशों की यात्रा मोटरसाइकल से पूरी कर चुके हैं। करीब 6.5 महीने चलने वाली इस यात्रा में समय के साथ, इस संकल्प में सेना और समाज के प्रतिष्ठित विभूतियों का भी साथ मिला, जिनमें प्रमुख हैं – मेजर जनरल विनोद भट, मेजर जनरल ब्रजेश कुमार, मेजर जनरल सोम पिल्लै, लेजनरल एस डी दुहान, ले जनरल एस ए क्रूज, पद्मश्री अनिल जोशी, पद्मश्री डॉ के के अग्रवाल, पद्मश्री प्रो प्रमोद टंडन, पद्मश्री डॉ सी पी वोहरा, इत्यादि।

लगभग 5530 किमी लम्बी और 6.5 महीने में पूरी होने वाली यह यात्रा, विश्व की कठिनतम और सबसे लम्बी पदयात्रा है जिसका उल्लेख शास्त्रों में भी मिलता है लेकिन आज तक माँ गंगा की ऐसी परिक्रमा कोई कर नहीं सका है। पूरे 11 वर्षों तक चलने वाली यह यात्रा सिर्फ एक यात्रा नहीं हैं, यह एक ऐसा प्रण है जो गंगा मैया को फिर से निर्मल अविरल करके ही थमेगा। इसी के तहत 16 दिसबंर को सैनिक, किसान और पर्यावरणविद् के एक जत्थे ने पदयात्रा शुरू की। लगातार 6.5 महीने (190 दिन) तक ये पैदल यात्री चलते रहे और प्रयागराज से आगे बढ़ते हुए गंगासागर पहुंचे, वहां से यू टर्न लेकर गंगा के दूसरी छोर पर आए और आगे बढ़ते हुए फिर गंगोत्री तक पैदल गए, फिर वहां से वापस प्रयागराज पहुंच कर करीब 5530 किलोमीटर की पैदल यात्रा संपन्न की। सेना से सेवानिवृत्त सैनिकों ने जब गंगा की परिक्रमा की वैदिक परंपरा को पुनर्जीवित करने का मन बनाया तो उस वक्त उनके दिमाग में सिर्फ एक बात थी कि हमें गंगा देखना है एवं महसूस करना है।

गंगा यात्रा

गंगा की विहंगम वृहद यात्रा पर रिपोर्ट

अतुल्य गंगा का मकसद और उद्देश्य था गंगा को समझना, गंगा में क्या दिक्कते हैं, गंगा से जुड़ें मुद्दे क्या हैं इनको लेकर हमारी जानकारी कितनी है। इन्ही उद्देश्यों के साथ यह यात्रा प्रारम्भ की गयी। गंगा में प्रदूषण है लेकिन पिछले कुछ सालों में, सरकार और समाज की पहल से गंगा में निश्चय ही सुधार नजर आने लगा है। इस 5530 किलोमीटर की पैदल यात्रा के बाद गंगा को देखकर हमारा नजरिया बदल गया। जिसे अब हम गंगा ज्ञान कहते हैं।

अतुल्य गंगा परिक्रमा टीम को चलते समय जनता और युवा NCC ग्रुप्स का अपार सहयोग मिला। हर रोज एक गंगा गोष्ठी का आयोजन किया गया और गंगा के बारे में चर्चा हुई। बनारस से बिहार तक, मोकामा से मुर्शिदाबाद तक और गंगासागर से गंगोत्री तक – एक बात तय थी – कि अतुल्य गंगा परिक्रमा – अपनी तरह का जन भागीदारी का पहला साहसिक बड़ा प्रयास है। यह परिक्रमा सम्पूर्ण गंगा बेसिन को एक सूत्र में बांधने कि सकारात्मक क्षमता रखती है। गंगा किनारे रहने वाले लोगों का मानना है कि, गंगा में प्रदूषण है लेकिन पिछले कुछ सालों में, सरकार और समाज की पहल से गंगा और घाटों में सुधार नजर आने लगा है। जिसमें जागरूकता एक बेहद महत्वपूर्ण विषय रहा। सक्रिय जनभागीदारी – जिस तरह से इतनी विशाल पदयात्रा बगैर जन सहयोग के संभव नहीं थी, उसी तरह से बगैर सक्रिय जनभागीदारी के गंगा की अविरलता और निर्मलता को कायम रखना मुश्किल है। खास बात ये है कि यात्रा का उद्देश्य गंगा को नहीं खुद को बचाना है, क्योंकि अगर नदी नहीं रही तो हमारा रहना मुश्किल है। अतुल्य गंगा नाम इसलिए ही रखा गया क्योंकि लोगो की जितनी अपार श्रद्धा, विश्वास और भक्ति माँ गंगा के लिए है उतनी विश्व की किसी और नदी के लिए नहीं है और इसीलिए यह हर मायने में अतुल्य है।

टीम को परिक्रमा के दौरान ये बात भी समझ आती है कि गंगा भारत के इतने बड़े स्तर को पोसती है लेकिन गंगा की खुद की कोई जमीन नहीं है। नदी की अपनी जमीन का नोटिफिकेशन होना चाहिए। अब तक ऐसा नहीं हो पाने की वजह से जिसकी जैसी मर्जी वो गंगा को कब्जाता रहा है और अपने हिसाब से उसको हड़पने का प्रयास करता रहा है। यही कारण है कि बाढ़ के मैदान और नदी किनारे के जंगल केवल नाम मात्र के रह गए हैं। किसी भी नदी की निर्मलता के लिए उसकी अविरलता अनिवार्य शर्त होती है, गंगा पर भी यही बात लागू होती है। इस अविरलता की अनिवार्यता की जरूरत बिहार में आकर और समझ में आती हैं, यहां बढ़ती सिल्ट की वजह से गंगा घिसट– घिसट कर आगे बढ़ने को मजबूर हो जाती है। और इसका नतीजा बिहार की खेती से लेकर वहां के सामाजिक जीवन पर भी देखने को मिलता है। बिहार में बढ़ती सिल्ट इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसी के साथ गंगा के किनारे बसे कई बड़े शहर जैसे हरिद्वार, कन्नौज, कानपुर, प्रयागराज, वाराणसी, गाजीपुर, पटना, कोलकाता में बगैर ट्रीट किये सीवेज और औद्योगिक गंदगी का सीधे गंगा में जाना एक गंभीर विषय है जिस पर तेजी से काम किए जाने की जरूरत है।

अतुल्य गंगा ने गंगा की सफाई के लिए 11 साल (2020–30) का लक्ष्य तय किया है। इसका पहला चरण ये विशाल पदयात्रा थी। इस पदयात्रा के जरिये अतुल्य गंगा ने युवाओं को जोड़ने का सफल प्रयास किया है। पदयात्रा के दौरान ही एक समर्पित टीम गंगा में मिलने वाले हर प्रदूषण की जियोटैगिंग और पानी की शुद्धता मापने का काम करती रही। इस प्रदूषण का मापन प्रत्येक 15–30 किलोमीटर की दूरी पर किया गया। टीम मैनेजर जनरल विनोद भट्ट के नेतृत्व में गंगा हेल्थ डेशबोर्ड तैयार किया है, जिसके जरिये प्रदूषण का डाटा एकत्रित किया है जो आने वाले वक्त में गंगा से जुड़ी समस्याओं से निपटने में एक अहम भूमिका निभा सकता है।

इसी तरह पदयात्रा के दौरान वृक्षमाला कार्यक्रम भी साथ साथ चलता रहा। दरअसल गंगा की मिट्टी को संरक्षित रखने और मैदान में आने वाली बाढ़ के बचाव के लिए जितना जरूरी भूमिगत जल का बचाव है उतना ही जरूरी है इसके फ्लोरा–फौना को सुरक्षित करना है जो गंगा की मिट्टी को और हमें बाढ़ से बचा सकता है। इसी के चलते ग्रीन इंडिया फाउंडेशन की एक समर्पित टीम ने गंगा के पास बरगद, नीम और पीपल जैसे हजारों पेड़ लगाए। लेकिन ये वृक्षारोपण अन्य वृक्षारोपण से अलग इस तरह से रहा कि इन वृक्षों को लगाने के साथ स्थानीय निवासी या संगठन को गंगा जल लेकर संकल्प दिलवाया गया कि वे वृक्षों की जिम्मेदारी का निर्वाह करेंगे। पूरी यात्रा के दौरान टीम ने 30,000 से ज्यादा वृक्षों का रोपण किया।

अच्छी बात ये रही कि अलग अलग माध्यमों से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लाखों लोग यात्रा के साथ हमेशा जुड़े रहे। जो यात्रा की एक बड़ी सफलता है। आने वाले 10 सालों में, हर साल के अंत तक अतुल्य गंगा टीम गंगा की सेहत से जुड़ा एक रिपोर्ट कार्ड जारी करेगी। इसकी मदद से गंगा के कोने – कोने में मौजूद प्रशासन और समाज बहुत ही सहजता के साथ गंगा की सफाई पर निगरानी रख पाएंगे और गंगा की सफाई सुलभ हो सकेगी।

सौजन्य से –

कर्नल (रि.) मनोज केश्वर

मुंडमाल परिक्रमा की झलकियाँ

BREATHING NEW LIFE IN INDIAN RIVERS

Namami Gange project launched in 2015 for environmental protection and restoring cleanliness of the mighty Ganga has assumed great signifcance for the cultural and ecological resurgence. It contributes massively towards achieving food security, economic well-being and livelihood of the huge populace residing along its basin & evolves framework for river rejuvenation.

Rajiv Ranjan Mishra, Director General, National Mission for Clean Ganga (NMCG)

DISTINCT MISSION WITHOUT A PARALLEL

During the conceptualisation of Namami Gange Mission by the Government of India, the big question was that cleaning of the holy river Ganga had been going on for ages without final outcome, so how different would this be when compared with past initiatives? However, it has been a torchbearer in its comprehensive approach based upon intensive scientific research by IITs and other expert institutions. Apart from incorporating things to be done in short, medium as well as long term, this mission is different from other initiatives as it is a holistic programme based on multi-sectoral, multi-agency and multi-level approach, broadly focussing on Pollution Abatement (Nirmal Ganga), Improving Flow and Ecology (Aviral Ganga), Strengthening People-River-Connect (Jan Ganga) and Research Knowledge Management (Gyan Ganga).

Along the entire length of river Ganga, these expert institutions found out about the towns and villages, the pollution status in these places, earlier work that had been undertaken and how much is in good condition and what further needs to be done. This approach became the defining moment to highlight basically the difference and approach and was not limited to only pollution abatement, but included ways to improve the river flow as well as the ecology of the entire system; to devise strategies to connect people with the river and convert it into a kind of peoples' movement, and take decisions based upon evidence, research and field assessment.

Another difference has been the establishment of NMCG as an empowered institution under the Environment (Protection) Act 1986, laying down fundamental principles with a comprehensive framework for rejuvenation of rivers in the Ganga Basin. A first for the Mission has been the approach to create assets and ensure their proper functioning. This saw the introduction of PPP for sewerage infrastructure for the first time in India through the Hybrid Annuity Mode (HAM), wherein only 40% is paid to the concessionaire during construction and the rest 60% for 15 years in annuity along with interest and O&M charges linked with compliance to discharge standards. It has brought a paradigm shift from payment for construction to payment for performance. There is improved governance in citywide wastewater management with 'One City-One Operator' approach along with HAM, involving merging rehabilitation of old assets and creation of new assets and O&M for all of them under one operator. The progress is visible in terms of improving water quality and cleaner riverbanks. This new model is being followed by other states also.

The Namami Gange program was given a dedicated non-lapsable budget of INR 200 billion for a period of 5 years (2015-20). This is also a 100% centrally funded programme. The certainty of funds enabled a more comprehensive approach towards rejuvenation of the river.

335 projects have been sanctioned under the Namami Gange initiative, out of which 142 projects have been completed and the remaining are under various stages of execution. From a mere 28 sewerage infrastructure projects existing in 2014 for creating 463 MLD treatment capacity, 156 sewerage projects have been sanctioned till date to create 4856 MLD treatment capacity.

ENSURING FLOW, IMPROVING ECOLOGY

The notification, in October, 2018, of the minimum ecological flow in the River Ganga required to be maintained at different points in different stretches at all times, starting from the head streams of river Ganga up to Haridwar in Uttarakhand and from Haridwar to Unnao in Uttar Pradesh was another major step, formally putting in place a mechanism for monitoring of flow and recognising the right of the river over its own water.

Namami Gange includes all rivers in the Ganga basin. Besides Ganga, various Projects have been completed/are at various stages of completion in other rivers such as Yamuna, Gomti, Kali, Ramganga (in Uttar Pradesh), Burhi Gandak, Kharkhari (in Bihar), Banka, Damodar (in West Bengal). The principle of managing the river as a single system, including its tributaries, smaller rivers, floodplains, wetlands, springs, work for maintaining continuity, has brought in a holistic and long-term vision.

NMCG is working on improving flow and overall ecology through a mix of supply and demand side management of water which includes Wetland Conservation, Afforestation, Bio-diversity Conservation, Sustainable Agriculture, Small River Rejuvenation etc.

CONNECTING PEOPLE – REJUVENATING THE GANGA

People-River-Connect forms the crux of the Ganga rejuvenation programme. As a major outreach initiative, dedicated cadres of Ganga saviours like community level volunteers, trained by Wildlife Institute of India, Ganga Doots (NYK), Ganga Mitras and Ganga Vichar Manch, have been developed, who educate people and take up activities aimed at keeping the river clean, protect water sources and aquatic life. More than 150 river fronts and crematoria, along the river, have been constructed as part of the public outreach programme. Mr Gajendra Singh Shekhawat, Minister for Jal Shakti himself encourages community volunteers through periodical direct interactions.

Several activities such as adventure sports like rafting expeditions, marathons, Cleanathons, Plantation Drives, Ganga Dialogues, Ganga Utsav, Ganga Quest – an online Quiz, etc. are organized regularly aimed at bringing the public closer to the river. Ganga Quest aims to reach out to the school children and youth, spread the message of the need to keep the river clean and healthy. It is an annual event conducted with TREE Craze Foundation and last year the quiz attracted participation of more than a million people from far and wide within the country and 10 international destinations. Encouraged by its success, NMCG is organising the online quiz - 'Ganga Quest in April – May'2021(www.gangaquest.com). 'Rag Rag Me Ganga', a travelogue telecast on DD National evoked great response and got very high IMDb ranking of 9.5.

RESEARCH AND TECHNOLOGICAL INTERVENTIONS

Technology is an integral part of Namami Gange's vision for Clean Ganga. The Namami Gange programme accords high priority for research and evidence-based decision making and has a special place for the use of new technology including Geospatial technology. Running of STPs with a well-utilised capacity is being ensured with closer monitoring enabled by latest technology. NMCG is using cutting edge technologies like LiDAR to attain high resolution maps and data for the entire Ganga Basin.

RIVER CITY PLANNING

Namami Gange is an integrated mission with multi-sectorial interventions involving different ministries, departments and agencies at different levels. A framework for river centric planning and mainstreaming them into the urban masterplan is being developed.

With depleting water resources and increased pressure of urbanization, it is pertinent to protect and revitalize the water bodies. NMCG is working with the National Institute of Urban Affairs, Ministry of Housing and Urban Affairs, Government of India to develop the Urban River Management Plan and is also initiating a Ganga River Cities Alliance for exchange of knowledge and experience, which can be extended to the national level. Namami Gange has successfully integrated several initiatives for the first time to develop a framework for integrated urban water management, rejuvenation of urban wetlands and river stretches. An Urban River Management Plan for Kanpur city as a model is being developed.

EVOLVING FRAMEWORK FOR RIVER REJUVENATION

Prime Minister Mr Narendra Modi, while inaugurating all major projects in Uttarakhand, said "Namami Gange has emerged as the most comprehensive and largest river rejuvenation program. It has emerged as a template for river rejuvenation across the country". The National River Conservation Directorate is now under the Jal Shakti Ministry and integration is taking place. NMCG is anchoring the Central Monitoring Committee for rejuvenation of all polluted river stretches in the country and recently the National Green Tribunal (NGT) has ordered to use the approach of Ganga Authority Order, 2016 for other rivers too. This order had created institutional framework from national to district level and strengthened NMCG with an improved management structure by providing autonomy. Similar to Ganga, the Ministry has initiated basin level studies and biodiversity mapping of major rivers. Tamil Nadu has come up with its own mission 'Nadanthai Vazhi Kaveri' on the lines of Namami Ganga after extensive discussions with the Ministry. A similar programme has been envisaged for Musi river in Hyderabad.

SOCIO-CULTURAL AND ECONOMIC DIMENSIONS

Ganga is one of the most important rivers to Indians culturally, spiritually, ecologically and economically. It is rich in cultural heritage, natural splendour and biodiversity, host to several Ramsar sites, largest mangrove and national tiger reserve, and home to the national aquatic animal the Gangetic Dolphin. It is the most densely cultivated basin and is critical for ensuring food and water security and supports almost 45% of the Indian population. Ganga has been exploited to the hilt and it is time to ensure that it remains in good health to sustain the huge populace dependent on it.

A river in poor health casts an adverse effect on the country's economy. Prime Minister Mr. Narendra Modi has given the vision of Arth Ganga for the economic well-being of the people, linking conservation, agriculture and allied areas, tourism & culture, wetlands & biodiversity conservation, forestry, inland water ways etc. We have a long way to go and take everyone along in this Journey and turn it into a peoples' movement.

Courtesy - TIME Magazine

छोटी नदियों का
नीम नदी का

नीम नदी जो कि समाज व सरकार के प्रयासों से वर्तमान में अपनी मौजूदगी दर्ज करा रही है इसका जिक्र पौराणिक किस्से–कहानियों में मिलता रहा है। सरकारी दस्तावेज नदी का उद्गम हापुड़ जनपद के ऐतिहासिक दत्याना गांव के जंगल से सिद्ध करते हैं जबकि जनश्रुतियों के अनुसार नदी का उद्गम मेरठ जनपद के परीक्षितगढ़ कस्बे से होता है। वर्तमान परिस्थिति में सरकारी दस्तावेज सही सिद्ध होते दिखते हैं जबकि जनश्रुतियां परीक्षितगढ़ कस्बे से निकलने वाली विलुप्त हो चुकी कौशिकी नदी के संबंध में जानकारी देती हैं।

सरकारी दस्तावेजों पर गौर करें तो जानकारी मिलती है कि हापुड़ जनपद के दत्याना गांव से निकलकर बुलन्दशहर व अलीगढ़ से होते हुए कासगंज में श्याम बाबा के मन्दिर के निकट करीब 188 किलोमीटर की दूरी तय करके गंगा की प्रमुख सहायक नदी काली पूर्वी में समाहित हो जाती है। यह नदी हापुड़ जनपद में मात्र 14 किलोमीटर ही बहती है जबकि इसका बाकि करीब 174 किलोमीटर का बहाव क्षेत्र बुलन्दशहर, अलीगढ़ व कासगंज में है। नदी के कुल बहाव क्षेत्र के निकट करीब 200 गांव बसे हुए हैं, जो कि किसी न किसी प्रकार से नदी से प्रभावित होते रहे हैं।

नीम नदी का नाम नीम कैसे पड़ा? इसका सीधा व प्रमाणिक जवाब किसी के पास नहीं है लेकिन गांव के बुजुर्ग इसका कारण बताते हैं कि नदी किनारे नीम के पेड़ बहुत अधिक मात्रा में थे तथा इस कारण से ही नदी का पानी औषधीय गुणों वाला था। यह बरसाती नदी है जो कि दत्याना गांव के निचले जंगल से होकर बहती रही है। यहां आज भी करीब सौ बीघा जमीन में फैला तालाब मौजूद है। नदी उद्गम स्थल के निकट से एक रजवाहा बहता है जो कि नदी को दो हिस्सों में बांट देता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि रजवाहा मानव निर्मित है जो सिंचाई विभाग द्वारा किसानों के खेत तक नहर का पानी पहुंचाने के लिए बनाया गया था। रजवाहे का तल आज भी नदी तल से ऊंचा है। जाहिर है कि रजवाहा नदी के उद्गम के बीच से ही बनाया गया होगा। रजवाहे के दाहिने ओर करीब सौ बीघा जमीन तालाबों व खाइयों के रूप में खाली पड़ी है जबकि सरकारी माप–तौल में इन खाइयों के निकट की करीब सौ बीघा भूमि पर अवैध रूप से किसानों द्वारा खेती का कार्य किया जा रहा है। रजवाहे के बाईं ओर एक विशाल तालाब है जिसके आधे हिस्से में पानी है जबकि आधे हिस्से में अवैध रूप से खेती का कार्य हो रहा है। नदी उद्गम क्षेत्र में ही धनपुरा नाला आकर मिलता है, जो कि कई गांव के बरसाती पानी को नदी में मिलाता रहा है। यहां बरसात में आज भी पानी भर जाता है जबकि ग्रामीणों के अनुसार आज से करीब 20 वर्ष पूर्व तक अत्यधिक जल भराव के कारण यहां खेती करना संभव नहीं था और नदी में पानी भी पूरे वर्ष बहता रहता था। जैसे–जैसे भूजल स्तर नीचे खिसकता गया तथा औसत वर्षा का प्रतिशत प्रतिवर्ष भी कम होने लगा तो धीरे–धीरे नदी ने बहना बंद कर दिया। ज्यों–ज्यों नदी ने बहना बंद किया त्यों–त्यों किसानों ने नदी उद्गम से लेकर बहाव क्षेत्र के किनारों की भूमि अर्थात नदी बेसिन को अवैध रूप से अपने कब्जे में ले लिया।

नीम नदी इस मानसून सत्र में जीवंत होती हुई

नीर फाउंडेशन द्वारा नदी पुनर्जीवन कार्यक्रम के तहत नीम नदी सुधार का कार्य करीब एक वर्ष पूर्व प्रारम्भ किया गया था। नदी पुत्र के नाम से प्रचलित नीम नदी के उद्धारकर्त्ता रमन कान्त त्यागी द्वारा यूँ तो वर्ष 2006 से नदियों के सुधार के प्रयास किये जा रहे हैं। 2006 में हिण्डन नदी की पदयात्रा करके उसका नक्शा बनाना व उसके उद्गम को खोजने का कार्य किया। इसके बाद काली नदी पूर्वी के उद्गम की 300 बीघा जमीन को कब्जा मुक्त कराकर वहॉ तालाबों का निर्माण व उसका तकनिकी अध्ययन किया। नदी के प्रति इन कार्यो व नदी की एक समझ बनाने के कारण रमन को नदी पुत्र कहा जाने लगा। नीम नदी जो कि काली नदी की ही सहायक नदी है। रमन ने इसके उद्गम को खोजकर प्रशासन के सहयोग से नदी भूमि को कब्जामुक्त कराया।

हिण्डन काली व नीम नदी के उद्गम को खोजना व उसको पुनर्जीवित करने का कार्य रमन द्वारा अपनी लगन व मेहनत से किया गया। रमन ने हमेशा इन कार्यों में समाज को अपना साथी बनाया है।

नदी पुत्र रमन को नदियों के कार्य की प्रेरणा नदी चिंतन से प्राप्त हुई। पश्चिमी उत्तर प्रदेश गंगा–यमुना दोआब का क्षेत्र है। इन दोनों नदियों के मध्य हिण्डन काली पश्चिमी, काली पूर्वी, कृष्णा, धमोला, पांवधोई, नगदेही, एरिल, बाण, सोत, करवन, सलोनी व बूड़ी गंगा जैसी छोटी नदियों की पीड़ा को देखा तो अपनी आवाज को सरकारों तक यह कहते हुए पहुंचाया कि बड़ी नदियों को संवारने से पहले हमें उनकी सहायक छोटी नदियों की दशा सुधारना आवश्यक है। इन छोटी नदियों के किनारे का समाज पिछले तीन दशकों से जल प्रदूषण के प्रभाव झेल रहा है। रमन को जब जानकारी हुई कि नदी किनारे बसे समाज की पीड़ा की गुनेहगार स्वयं नदी ही है तो दृढ़ निश्चय किया गया कि जो समाज नदियों के किनारे बसा पला बढ़ा व विकसित हुआ अगर यह आज वहां से उजड़ने के कगार पर है तो उस कारण को दुरूस्त करना होगा अर्थात इन नदियों को प्रदूषण मुक्त करना होगा। यही रमन का नदियों के प्रति लगाव का प्रमुख कारण रहा। आज रमन का पूरा जीवन इस छोटी नदियों के पुनर्जीवन में लगा है। इसके लिए रमन ने एक नदी पुनर्जीवन मॉडल भी बनाया है। इस मॉडल के 6 मूल मंत्र तरल व ठोस कचरे की रोकथाम, नदी किनारे के तालाबों का पुनर्निमाण, नदी किनारे सघन वनीकरण, नदी किनारे रसायनमुक्त कृषि, नदी में चेकडैम तहत जन–जागरूकता तय किये गए हैं।

नीम नदी के पुनर्जीवन का कार्य एक वर्ष पूर्व प्रारम्भ किया गया था। नदी उद्गम की किसी को जानकारी नहीं थी। रमन ने पहले नदी से संबंधित दस्तावेज एकत्र किए। सेटेलाइट

सिंचाई विभाग के अधिकारी के साथ नीम नदी का निरीक्षण करते हुए श्री रमन कांत त्यागी

नीम नदी के उद्वार हेतु जनसभा को संबोधित करते मंडल आयुक्त श्री सुरेन्द्र सिंह आइ.ए.एस

ग्रामीण को नीम नदी के उद्वार हेतु जानकारी देते हुए श्री रमन कांत त्यागी

नीम नदी उद्गम पर तैयार दो तालाब

ग्रामीणों के साथ नीम नदी के उद्वार हेतु श्रमदान करते हुए

शूटर दादी के नाम से प्रचलित श्रीमति प्रकाशी तोमर जी को नीम नदी के विषय मे जानकारी देते हुए श्री रमन कांत त्यागी

मंडलआयुक्त मेरठ श्री सुरेन्द्र सिंह आइ.ए.ए.एस श्री कमल मलिक विधायक एवं अन्य गणमान्य लोगों के साथ नीम नदी का खुदाई करते हुए

मुख्यविकास अधिकारी मेरठ द्वारा नीम नदी का निरीक्षण करते हुए

नीम नदी के उद्वार हेतु भूमि पूजन करते हुए

मैप से, ब्रिटिश गजेटियर से तथा टोपोशीट से नदी उद्गम को खोजकर प्रशासन से सम्पर्क किया तथा नदी पुनर्जीवन का कार्य प्रारंभ कर दिया। काली नदी पूर्वी की सहायक नदी है तो इसीलिए इस नदी को पहले पुनजीर्वित करना आवश्यक है। सभी पुराने दस्तावेजों तथा जमीनी हकीकत के आधार पर नदी का एक प्रतिवेदन तैयार किया गया तथा तत्कालीन जिलाधिकारी हापुड़ श्रीमति अदिति सिंह के साथ उस पर परिचर्चा की गई। श्रीमति अदिति सिंह ने नदी पुनर्जीवन प्रयास का` सहयोग दिया।

हापुड़ जनपद में 14 किलोमीटर नदी की पद यात्रा करके नदी का एक नक्शा तैयार कर नदी को समझा गया। नदी किनारे के प्रत्येक गांव में नदी समितियों का गठन किया गया तथा उनके साथ नदी सुधार की बैठकें की गई। इन गांवों की नदी समितियों के माध्यम से 'नीम नदी संसद' का गठन किया जा रहा है। इस नदी संसद को ही अपनी नदी के सभी अधिकार होंगे। यह संसद ही नदी के सभी निर्णय लेगी। नदी के साथ निकट बसे गांवों के अतिरिक्त समाज के अन्य तबकों व व्यवसाय के लोग भी नीम नदी पुनर्जीवन के साथ जुड़ रहे हैं। रमन कान्त त्यागी बुलन्दशहर के जिलाधिकारी श्री रविन्द्र कुमार के भी सम्पर्क में रहे। श्री रविन्द्र कुमार पर्यावरण प्रेमी अधिकारी हैं जिन्होंने बुलन्दशहर में नीम नदी पुनर्जीवन के लिए एक समिति का गठन कर दिया और बुलन्दशहर जनपद में भी नदी सुधार की योजना बनवा दी। सर्वप्रथम नीम नदी के लिए राजस्व विभाग, सिंचाई विभाग, वन विभाग व लघु सिंचाई विभाग का सहयोग लेकर नदी उद्गम भूमि का चिन्हांकर कराया गया। 7 जून, 2021 को नीम नदी के उद्गम पुनर्जीवन व मुख्य धारा की सफाई का कार्य मण्डलायुक्त मेरठ श्री सुरेन्द्र सिंह के कर–कमलों द्वारा विधि–विधान से प्रारम्भ किया गया। इस दौरान जिलाधिकारी हापुड़ श्री अनुज सिंह, मुख्य विकास अधिकारी हापुड़ श्री उदय सिंह, जिला वानिकी अधिकारी हापुड़, विधायक श्री कमल मलिक व सामाजिक कार्यकर्ता श्री ग्लैडविन त्यागी सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे। नदी उद्गम पुनर्जीवन का कार्य जोर–शोर से चल रहा है तथा पहले चरण में नदी की मुख्य धारा की सफाई का कार्य भी प्रारम्भ कर दिया गया है। नदी उद्गम पर बनने वाली झील करीब 100 बीघा जमीन को कब्जामुक्त कराकर बनाई जा रही है। अब नदी के इस कार्य में विभिन्न सामाजिक संगठन व दर्जनों गांवों के प्रधान महती भूमिका निभा रहे हैं। 1–7 जुलाई, 2021 के मध्य नदी किनारे नीम के हजारों पौधे लगाए गए। नदी के कार्य के प्रचार प्रसार के लिए नीम नदी का फेसबुक पेज बनाया गया है तथा लोगो तैयार किया गया है। शीघ्र ही नदी की वेबसाइट व एक डॉक्यूमेंट्री बनाने की भी योजना है। रमन कान्त त्यागी नीम नदी के पुनर्जीवन से समाज में बरसाती व छोटी नदियों को लेकन व्याप्त निराशा को आशा में बदलना चाहते हैं। नीम नदी का पुनर्जीवन समाज व सरकार के सामुहिक प्रयास का एक अनुठा उदाहरण साबित होगा।

श्री रमन कान्त त्यागी
(नदी पुत्र)
संस्थापक – नीर फाउंडेशन

गंगा नदी में शैवाल की खबरें

एक रिपोर्ट

वाराणसी से शैवाल की सफाई की रिपोर्ट एवं चित्र

22 मई, 2021 के समय से ही गंगा नदी में शैवाल की खबरें कुछ मीडिया में आईं। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन ने तत्काल इसका संज्ञान लेते हुए महानिदेशक की अध्यक्षता में संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक की। महानिदेशक द्वारा इस विषय पर जानकारी एकत्रित करने तथा आवश्यक कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया। उत्तर प्रदेश के गाजीपुर क्षेत्र में 2 एजेंसियों जो बॉयोरेमिडिएशन पद्धति से जल शोधन क्षेत्र में कार्यरत हैं, को इस शैवाल की समस्या के समाधान हेतु प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया गया। इनमें से केवल एक एजेंसी ने स्थिति की गंभीरता के मद्देनजर 28 मई, 2021 से गाजीपुर क्षेत्र में गंगा नदी के 1.5 किमी. स्ट्रेच पर इस प्रयोग की शुरुआत की।

10 जून, 2021 को महानिदेशक राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन की अध्यक्षता में एक और उच्चस्तरीय बैठक की गई जिसमें नमामि गंगे के अधिकारियों के साथ ही जिला अधिकारी वाराणसी, नगर आयुक्त वाराणसी, उत्तर प्रदेश जल निगम, उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी भी उपस्थित रहे। उक्त बैठक में जिला अधिकारी वाराणसी द्वारा बताया गया कि गंगा नदी में शैवाल की स्थिति एवं कारण जानने के लिए एक कमेटी का गठन किया गया जिसमें नगर निगम, प्रदूषण नियंत्रण तथा जल निगम इत्यादि के अधिकारी शामिल थे। कमेटी ने अपनी प्रारंभिक रिपोर्ट में बताया कि वाराणसी में शैवाल का मुख्य कारण मिर्जापुर के ऑक्सीडेशन तलाब के ओवर फ्लो के कारण हुआ है। विचार–विमर्श के दौरान यह बात भी सामने आई कि कोरोना की वैश्विक महामारी के कारण क्योंकि वाराणसी शहर में लॉकडाउन था तथा नावों एवं कस्तियों का आवागमन बंद था। इस वजह से नदी के पानी में आई स्थिरता शैवालों का अन्य सम्भावित कारण रहे।

महानिदेशक द्वारा इस बैठक के दौरान यह भी निर्देशित किया गया कि इस तरह की समस्याओं के उपचार हेतु वैश्विक स्तर पर उपलब्ध समाधान तलाशे जाएं। साथ ही यह भी स्पष्ट रूप से निर्देशित किया गया था कि संभावित समाधान के नदी की जैव–विविधता एवं जल की गुणवत्ता पर कोई भी विपरीत प्रभाव न पड़े, इस बात को पूरी तरह सुनिश्चित किया जाना था। इसी कड़ी में Say Earth तथा OASE Living Water संस्थाओं द्वारा विशेष यौगिक उपलब्ध कराया गया जिसके संस्थानों द्वारा पहले परीक्षण किए जा चुके थे। नमामि गंगे द्वारा तकनीकी परियोजना अधिकारी को इस परीक्षण हेतु वाराणसी भेजा गया।

13–14 जून, 2021 को इस विशेष यौगिक का मुख्य नदी से जल लेकर छोटे स्तर पर परीक्षण किया गया तथा नगर निगम, प्रदूषण नियंत्रण, जल निगम एवं नमामि गंगे की टीमों को संतोषजनक नतीजे मिलने के बाद दशाश्वमेघ घाट के आस–पास मुख्य नदी पर इस यौगिक का परीक्षण शुरु किया गया और इस समस्या का समाधान हुआ।

Hindustan Times

NMCG team sprays solution in Ganga to remove algal bloom

HT Correspondent
letters@htlive.com

VARANASI: A team of National Mission for Clean Ganga (NMCG) sprayed special solution in the Ganga in Varanasi to disintegrate algal bloom here on Sunday.

The team, led by project officer (technical), NMCG, Neeraj Gahlawat and comprising NMCG, Varanasi, convener Rajesh Shukla, city health officer Dr NP Singh sprayed the special solution in river Ganga from Dashashwamedh Ghat to Asi Ghat. The team has brought around 15 kg powder from which solution was prepared and sprayed.

"Around 3000 litre solution was prepared using 7.5 kg powder and sprayed in a long stretch of river Ganga in Varanasi to disintegrate algae strains and prevent algal bloom," said Neeraj Gahlawat.

He said around 3000 litre

NMCG team sprays solution in Ganga at Dashashwamedh Ghat in Varanasi on Sunday. RAJESH KUMAR/HT

algae," said Rajesh Shukla.

The algal bloom was seen in the Ganga nearly 20 days back. After few days, it disappeared and was seen again in the same stretch of the Ganga around a week ago. Thereafter, DM, Varanasi, Kaushal Raj Sharma constituted a team on June 7 that col-

in Varanasi stretch of river Ganga due to presence of nitrogen and phosphorous (though mild) which mainly come in the river water from untappec drains."

A 50 MLD untapped drain in Asi area falls into the river Ganga. Likewise, another JC

शैवाल सफाई अभियान, वाराणसी

Central Monitoring Committee of National Green Tribunal

Coordinating for wholesome rejuvenation of Polluted River Stretches in the Country

Central Monitoring Committee

Ministry of Jal Shakti through National Mission for Clean Ganga (NMCG) and National River Conservation Directorate (NRCD) along with Central Pollution Control Board (CPCB) have been monitoring the implementation of Action Plan for 'Restoration and Rejuvenation of 351 Polluted River Stretches' identified in 31 States/ UT of India. For overseeing the works, a Central Monitoring Committee (CMC) under the Chairmanship of Secretary, Ministry of Jal Shakti was constituted vide Hon'ble NGT's order dated 06.12.2019 in the Matter OA No. 673 of 2018. The aim is to achieve bathing quality standards in these 351 polluted river stretches.

Since January 2020, the Committee is holding regular meetings with Chief Secretaries of 31 States/UTs reviewing the progress made by the States and till July 2021, 10 meetings of the Committee have been held. Based on the reviews, 3 quarterly reports have been filed in NGT.

These 351 polluted river stretches across India were identified by CPCB based on the water quality monitoring data provided by the State Pollution Control Boards (SPCBs). And as per the Biological Oxygen Demand (BOD) levels in the river, the stretches were categorized into Priority I to V. Of the 351 stretches, 45 river stretches have been classified as Priority I rivers (having BOD more than 30 mg/l), 16 as Priority II rivers (having BOD between 20-30 mg/l), 43 as Priority III rivers (having BOD between 10-20 mg/l), 72 as Priority IV rivers (having BOD between 6-10 mg/l) and 175 as Priority V rivers (having BOD between 3- 30 mg/l).

Central Monitoring Committee, while monitoring the status of implementation of directions of Hon'ble NGT, laid its emphasis on the fact that rivers which are already clean should remain so and compliance to the environmental laws in respect of existing sewage infrastructure is maintained. Further, the best practices adopted by a particular State/ UT are being highlighted in the meetings and other States are being directed to assess and appropriately implement the same in their States. The States have also been facilitated by holding regular webinars with participation from almost all the States/ UTs. One such webinar was held in July 2020 on "Mainstreaming Faecal Sludge & Septage Management (FSSM) in Ganga Basin". States were urged to consider the implementation of FSTPs and/ or co-treatment of faecal sludge in existing STPs, in all towns wherever feasible, so that dumping of the faecal sludge in water bodies/ land and thereby polluting them, can be avoided. NMCG had organized another webinar on 'Municipal Solid Waste Management' in November 2020, for informing the State Governments/ UT Administrations on different successful approaches and models that can be adopted for management of municipal solid waste. In the webinar, presentations were made by MoEF&CC with regard to the Solid Waste Management Rules, 2016 and MoHUA on the status of various initiatives being undertaken in India and the achievements under Swachh Bharat Mission.

In addition to the meetings, field visits were also carried out by officials from NRCD, NMCG and CPCB to the States to ascertain the level of pollution, existing treatment infrastructure, gap in treatment and plan proposed to bridge the gap.

With regular monitoring through Central Monitoring Committee meetings, it is seen that a number of sewerage infrastructure projects have been completed in a time bound manner in the year 2020, works on a number of projects have been initiated and a number of projects have been sanctioned or are under sanctioning. Many of the States such as Haryana, Uttarakhand, Uttar Pradesh, Delhi, Madhya Pradesh, West Bengal, Tamil Nadu, Karnataka have installed or are installing online monitoring systems for capturing the real time data of the existing STPs. This shall lead to improvement in the utilization capacities of the existing STPs as well as regular monitoring of projects under construction. Many of the States are now opting for other sewage treatment technologies instead of conventional STPs such as FSSM, FSTP, phyto-remediation, bio-remediation, bio-digesters etc. There is improvement in water quality of the rivers as being reported by many of the States.

Further, Hon'ble NGT in the matter O. A. No. 325/2015 vide its order dated 18.11.2020, directed CMC to monitor periodically the progress of States/UTs in preparation of Action Plan for restoration of water bodies and its implementation. 1st meeting in this regard was held on 31.03.2021.

CMC meetings in the matter OA No 673 of 2018 held till July 2021

Webinar regarding FSSM held on 22.07.2020

5th meeting of CMC held on 31.08.2020

6th meeting of CMC held on 30.09.2020

Webinar on Municipal Solid waste Management held on 06.11.2020

7th meeting of CMC held on 09.11.2020

9th meeting of CMC held on 04.03.2021

CMC meeting held on 30.03.2021 with regard to restoration of water bodies

10th meeting of CMC held on 09.07.2021

Integrating Rivers

Strategic Guidelines for River

Make room for river....

This idea of river-city connect was most aptly captured by the Hon'ble Prime Minister while chairing the meeting of National Ganga Council on 14th December, 2019 providing invaluable guidance to us in this endeavor:

"There is need for new thinking for 'river cities'. There is need for the residents of those cities to ask, 'What can we do for the rivers'. Learning from experience of Namami Gange, there is need for a new river centric thinking in planning for cities on the banks of rivers, the city master plan, at present, does not adequately address this. The river health needs to be mainstreamed into urban planning process by development of Urban River Management Plans. Cities should be responsible for rejuvenating their rivers. It has to be done not just with the regulatory mindset but also with development and faciliatory outlook."

Namami Gange started as a mission to clean up the Ganga soon transformed into a mission that looks far beyond mere cleaning. It is envisioned to try to restore the wholesomeness of River Ganga, the collective consciousness of our country. It is not just a river but gives us our sustenance. It is not just one river but represents rivers and water. Drawing from a comprehensive Ganga River Basin Management Plan developed by a consortium of 7 IITs, Namami Gange mission aspires for wholesome rejuvenation of not just the Ganga but its tributaries as well with multiple interventions for pollution abatement (Nirmal Ganga), improving ecology and flow (Aviral Ganga), strengthening people-river connect (Jan Ganga) and promoting research, development and knowledge management (Gyan Ganga). It is doing so by addressing the major drivers, push and pull factors, and interactions that have a bearing on the river's overall health.

Rivers are integral part of Urban Planning perhaps the biggest driver, in this context, is urban sector development which brings in large pollution load on rivers and is also impacting adversely the urban wetlands and floodplains.

Cities have largely been held responsible for the deteriorated state of rivers, and therefore, will need to play a vital role in the rejuvenation efforts as well. Several innovative steps have been taken up in Namami Gange to make the investments in municipal waste management sustainable for long term by making 15-year operation & maintenance as part of project, ensuring performance-based contracts through introduction of PPP through Hybrid Annuity Mode (HAM) and improving governance through one city-one operator approach. But we realized the need to mainstream river in the processes of urban planning, otherwise we would neither be doing justice to the city nor the river.

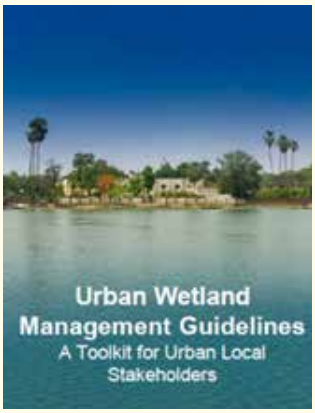

A number of interventions required for rejuvenating urban rivers cannot only be achieved by infrastructural projects and engineering solutions alone. A typical case in point is regulating, and if required restricting, development activities in the flood plains of rivers to ensure 'room for the river'. Likewise, conservation of water bodies and wetlands, which are deeply interlinked to the river in anyway, requires a different management approach. With the help of School of Architecture & Planning, Delhi a guide book for protection and conservation of urban wetlands has been prepared and shared with municipal commissioners through Ministry of Housing and Urban Affairs. Similarly, with Water Resource Institute, a guideline for eco-friendly river front development has been developed.

Strategic Guidelines for River Sensitive Master Plans

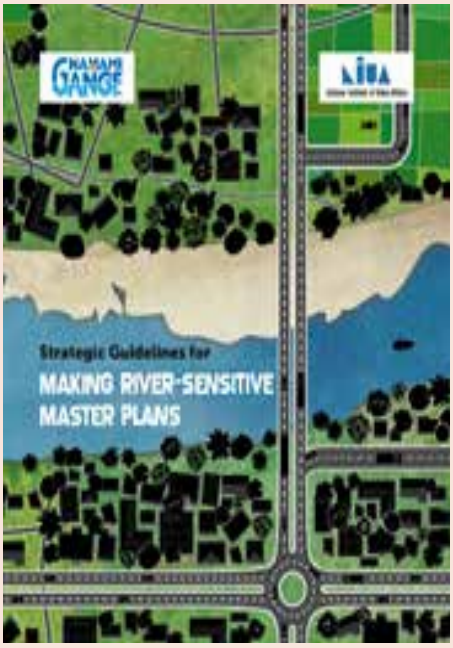

NMCG has been working with cities to make positive contributions to river basin health and strengthen the city-river and people-river connect. The purpose of this guidance document is to help address the river city connect. It is meant to help city planners across the Ganga River Basin, and the country at large, understand how to integrate river sensitive thinking into a Master Plan. It seeks to leverage on the legal sanctity of the Master Plan to ensure a harmonious relationship between cities and rivers. The document highlights a set of planning instruments and tools that planners can use to plan for and manage different river-related aspects in the city.

The document elaborates on seven tools and instruments within Master Plans that can be used to address various river-related urban challenges. Some of these are conventional avenues or tools typically associated with Master Plans. In the context of river planning, these include land use assignment for the river and its floodplain; development control regulations within the floodplain; and norms & standards for activities conducted in the floodplain. Some avenues have a strategic focus, such as localizing river related directions stipulated in national policies; and developing sectoral strategies for specific aspects of river management like removal of encroachments in the floodplain in a sensitive and empathetic manner. Others are recommendations and directions for creating the grounds for big ticket river-related projects like riverfronts, river tourism, river navigation, among others.

Unfolding Strategic Guidelines for River Sensitive Cities - Major Highlights

For long term mainstreaming of our river sensitive thinking, a guidance document titled "Strategic Guidelines for making River Sensitive Master Plans" was launched on the occasion of Ganga Dussehra, by Hon'ble Minister, Jal Shakti. The document, prepared under a joint project between NMCG and NIUA, is meant to help city planners across the Ganga River Basin, and the country at large, to understand how to integrate river sensitive thinking into a Master Plan.

NMCG is endeavoring to motivate city managers to acknowledge and respect rivers, water and ecology for having a truly smart and sustainable urbanization. Yamuna river has been facing an unfortunate fate in Delhi, with a mere 2% stretch of river that passes through this city, contributing to 76% of its pollution. It is therefore, an achievement that Delhi Development Authority's new draft of Delhi Master Plan 2041 has been able to mainstream River sensitive planning. Guided by NMCG's efforts and innovations in River and city interactions, DDA with support from NIUA, has, in the Master plan 2041 acknowledged Yamuna's importance giving center stage to its rejuvenation, developing a green belt, biodiversity parks, protection and development of water bodies, trees, heritage conservation etc. This is an important step in right direction.

Release of strategic guidelines for river sensitive master planning by Shri Gajendra Singh Shekhawat, Hon'ble Minister, Jal Shakti on 20th June 2021

GANGA QUEST- 2021 -

On the Occasion of Ganga

The grand Ganga Quest- 2021 edition came to a spectacular end on the auspicious occasion of Ganga Dussehra on of NMCG who worked hard to make the third edition of the Ganga Quest a spectacular success in the most difficult Hon'ble Minister of State for Jal Shakti, Secretary Jal Shakti, Director General, NMCG and host of other dignitaries, was held through a virtual studio setup in NMCG and all the winners, partners and stakeholders joined the event also and was seen live by thousands of people within India and from the world over including from countries like media platforms.

Ganga Dussehra is celebrated as the day on which river Ganga descended on earth and, therefore, has an important significance in the journey of Ganga and this day is celebrated with great fervor across the Ganga belt with people paying their obeisance to river Ganga whom they worship as a deity. It was on this auspicious day that the final winners of Ganga Quest were felicitated by the Hon'ble Jal Shakti Minister who congratulated them on this feat and wished them well for similar engagements with Mission Clean Ganga in future. The Hon'ble Jal Shakti Minister also appreciated the good work done by the members of various partner organizations like NYKS, Ganga Mitras of BHU, Ganga Task Force, Rotary International, Water Digest, United Schools Organization, Central and State Education Boards, Ganga Vichar Manch and host of other partners who worked tirelessly to reach out to people in large numbers and connect them to the third edition of the Ganga Quest and with the Namami Gange program. This Edition of Ganga Quest saw 11,01,379 people joining the quiz who enthusiastically participated in various rounds of the quiz for more than two months. The quiz was open to all people within and outside the country above the age of 10 years. The prime objective of this unique public outreach program was to connect with people at the ground and far flung level taking to them the message of clean and green Ganga and to join them with the movement of keeping Ganga clean for present and future generations.

During the course of the event, Shri Gajendra Singh Shekhawat, Hon'ble Jal Shakti Minister interacted with the winners of the quiz individually and applauded their connect with Ganga and passion for rivers and ecology specially coming from young minds. It was heartening to see children in the age group of 10 – 15 thinking so clearly and passionately about Ganga, clean rivers and environment and how they want to see Ganga and all other rivers rejuvenated for present and future generations. Likewise, Hon'ble Jal Shakti Minister also interacted with all the dedicated cadres of NYKS, Committed Ganga Mitras of Banaras Hindu University, representatives from United Schools Organization, Rotary International, World Bank (who is funding this overall Ganga quiz format) and others and lauded the humungous efforts made by them to mobilize people not only with the Ganga Quest but also with Ganga and its ecological importance. Various other guests from different walks of life

The Winners of Ganga Quest - 2021

Ganga Quest 2021 – Grade I

Osho Maheshwari
Class VI
Amity International School, **Noida, Uttar Pradesh**

Krishiv Khandelwal
Class VI
Sri Sathya Sai Seva Organisation, **Mumbai, Maharashtra**

Mawiya Shrivastava
Class VII
RDJPS School, Delhi

Ganga Quest 2021 – Grade II

Paramjot Singh
Class X
Sacred Heart Convent School, **Ludhiana, Punjab**

Ashish Pandey
Class X
Delhi Public School Ranipur, **Haridwar, Uttarakhand**

Hariom Gautam
Class X
Dalmia Vidya Mandir, **Rajgangpur, Orissa**

Ganga Quest 2021 – Grade III

Shreya Agarwal
Class XII
G.D Goenka Public School, **Ghaziabad, Uttar Pradesh**

Rishi Divya Kirti
Class XI
Delhi Public School, **Bokaro Steel City, Jharkhand**

Vihaan Malik
Class XII,
Delhi Public School, **Bareilly, Uttar Pradesh**

Ganga Quest 2021 – Grade IV

Shiva Nigam
Professional, HPCL, **Kanpur, Uttar Pradesh**

Aswani Kumar Sharma,
University Student, **Guwahati University, Assam**

Praveer,
Self Employed
Bokaro Steel City, Jharkhand

FELICITATION OF WINNERS

Dussehra 20th June, 2021

20th June 2021 with the felicitation of proud winners of the quiz and appreciation of various esteemed partners times. The finale event was chaired by Shri Gajendra Singh Shekhawat, Hon'ble Jal Shakti Minister and graced by partner organizations, Central and State Government representatives and proud winners of the quiz. The event on the virtual platform. The event was beamed live on social media platforms of NMCG and other organizations Belgium, Australia, Netherlands, Switzerland and Germany who watched the award ceremony on various social

also expressed their views on Ganga and talked highly on the efforts of NMCG for connecting the quiz in most difficult times and reaching out to millions of people in a short period of a couple of months with the aim of converting the Ganga rejuvenation efforts into mass people movement joining one and all in keeping the sacred river Ganga clean and healthy.

Some of the winners shared that they have become more sensitive towards the environment after preparing for Ganga Quest. Few others shared that they feel a sense of devotion towards not just Ganga but all rivers of the country because of what they learnt during the quiz. They also shared that while they were participating, their family members and friends also took great interest in knowing more about Ganga.

While interacting with various partner organizations, Shri Gajendra Singh Shekhawat, Hon'ble Jal Shakti Minister said "The physical infrastructure (like STPs, Ghats and crematoriums, etc) built under Namami Gange can be seen by all, but the far bigger achievement is of reviving people's awareness and devotion towards the sacred Ganga." He added that just considering our rivers as goddesses will not serve any purpose if that doesn't reflect in our treatment of rivers.

Mr. Xavier Chauvot de Beauchene, Task Team Leader World Bank encouraged the winners to continue contributing to environment conservation by becoming agents of change. He said, "Youth are social media savvy and can become ambassadors of Ganga rejuvenation." He congratulated NMCG & TCF for making it possible to reach out to more than 100 countries and more than one million participants. Shri Pankaj Kumar, Secretary, Ministry of Jal Shakti congratulated the winners and conveyed best wishes to all on the eve of Ganga Dusshera. He said the launch of guidelines for river-centric master plans is a very significant step towards river conservation. Shri Rajiv Ranjan Mishra, Director General, NMCG shared that enthusiasm towards Ganga Quest has increased over the year. He informed that this year 1.1 million people registered for the quiz from 113 different countries. He said, "We could also reach out to remote areas of the country. Similarly, making river sensitive plans river sensitive master plans will improve the river city connect and help both – cities and rivers to have sustainable growth." Ms. Bhawna Badola, CEO, Tree Craze Foundation explained the details of Ganga Quest and its diversity, champions among schools and teachers, and also schools with maximum participation. She made a presentation on the upcoming Continuous Learning and Activity Portal (CLAP).

During the event a book titled "Strategic Guidelines for Making River Sensitive Master Plans" was released by all the dignitaries present on the virtual platform. This guideline has been prepared by NMCG in association with National Institute of Urban Affairs (NIUA) and Mr. Victor Shinde, Director NIUA briefed the audience about this master plan and said that the thought behind the plan was that most of the pollution in a river is caused by cities along its banks. If cities are part of the problem, they have to be a part of the solution as well. He further informed that some of the elements of these guidelines have found place in the draft master plan MPD 2041 for Delhi. The Finale ended with a huge appreciation and thanks by Shri Rozy Agarwal, Executive Director NMCG to all partners and millions who joined the Ganga Quest 2021.

Finale Event in Progress - Hon'ble Minister interacting with winners and partners

Address by Hon'ble Minister

Hon'ble Minster for Jal Shakti felicitating the proud winners

Dignitaries at the Event

Xavier Chauvot de Beauchene, Task Team Leader, World Bank

Hon'ble Minster interacting with winners

DG-NMCG addressing the Event

जायका गंगा

गंगा बेसिन के जायकों के नजारे– गंगा नदी देश की न सिर्फ धार्मिक आस्था का प्रतीक है बल्कि सदियों से चलती आ रही संस्कृति और सभ्यता का भी प्रतीक है। गंगा किनारे देश की लगभग 43% आबादी बसती है जो कि किसी न किसी रूप से गंगा पर अपनी जीविका के लिए आश्रित है। इन समुदायों में विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृति, भाषा, पृष्ठभूमि एवं आर्थिक व्यवस्था के लोग सम्मिलित हैं जो कि गंगा के द्वारा एक डोर से बंधे हुए हैं। गंगा किनारे संस्कृति की पूरी एक विरासत हमें धरोहर के रूप में मिली है जहां पर विभिन्न प्रकार के जायके, खाने–पीने के तरीके, सामाजिक रीति–रिवाज, धार्मिक रीतियां, लोक नृत्य और लोक गीत, विभिन्न प्रकार के छोटे–बड़े त्यौहार एवं मेले गंगा के किनारे दिखाई देते हैं जो गंगा के आस–पास के इलाकों को बेहद रंगीन और दिलचस्प करते हैं। यहां एक बात महत्वपूर्ण है कि गंगा के किनारे उत्तराखंड की पहाड़ियों से लेकर गंगा सागर तक विभिन्न प्रकार के जायकें एवं स्वादिष्ट व्यंजन दिखाई देते हैं जो कि क्षेत्र विशेष या जगहों की शैली को भी उजागर करते हैं। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन ने ऐसे ही गंगा के किनारे बसे हुए सांस्कृतिक विरासत को खोज निकालने के लिए एक परियोजना शुरू की है जिससे की गंगा के अनेक क्षेत्रों में पाए जाने वाली संस्कृति, वहां की ऐतिहासिक धरोहर, वहां के लोक गीत, वहां की हस्त कला एवं शिल्प कला, और खासकर विभिन्न जायकों के स्वादों को एक जगह पर एकत्रित करेगी।

श्री राम भंडार, वाराणसी

इसी श्रृंखला में गंगा किनारे के जायकों की विशेषता को जानने के लिए राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन ने नवम्बर, 2020 में गंगा उत्सव के दौरान एक मनोरंजन यात्रा का आयोजन किया जिसका नाम था 'जायका गंगा किनारे वाला' और जिसे श्री अनुभव सपरा ने संकलन किया जो कि एक मशहूर जायकों एवं प्रसिद्ध जगहों के ख्याति प्राप्त मेजबान हैं। श्री अनुभव सपरा अपनी टीम के साथ मिलकर एक विशेष और अद्भुत यात्रा गंगा किनारे की, जिसके दौरान उन्होंने ऋषिकेश, हरिद्वार, प्रयागराज, वाराणसी, पटना और आखिर में कोलकाता में गंगा किनारे के विशेष खान–पान और वहां के विशेष जायकों की खोज करते हुए उन्होंने बेहद दिलचस्प तरीके से प्रदर्शित किया।

श्री अनुभव सपरा ने अपनी यात्रा की शुरुआत ऋषिकेश से की जो कि अपने आप में यह स्थान योग और ध्यान का एक विश्व विख्यात केंद्र है। उन्होंने यहां पर बहुत से मशहूर रेस्टोरेंट और कैफे जो कि न सिर्फ ऋषिकेश के निवासियों में प्रसिद्ध है बल्कि विदेशी सैलानी जो कि ऋषिकेश में आते हैं उनके बीच में भी यह बहुत प्रसिद्ध हैं जिसमें खास है 'स्टेप्स' कैफे, 'बेकरी ऑन व्हील्स' और 'चोटी वाला रेस्त्रा' इत्यादि। इस टीम ने यहां पर एक स्थानीय फल 'राम फल' जो कि स्वाद में खट्टा–मीठा लगता है और काले नमक के साथ परोसा जाता है और जिसके खाने से हमें बहुत सारे पौष्टिक लाभ होते हैं का भी जिक्र किया है।

आगे बढ़ते हुए वह हर की पौड़ी, हरिद्वार पहुंचे जो कि आस्था का एक अद्भुत प्रतीक है जहां पर देश और दुनिया से लाखों–करोड़ों लोग आकर गंगा में डुबकी लगाकर अपने पापों का प्रायश्चित करते हैं। हर की पौड़ी के आस–पास न सिर्फ धार्मिक धरोहर हमें देखने को मिलती है बल्कि स्थानीय खान–पान भी हर की पौड़ी पर विशेष रूप से दिखाई देते हैं जहां दुनिया भर के विभिन्न क्षेत्रों से आए सैलानी इन जायकों का भरपूर लुफ्त उठाते हैं। इन्हीं जायकों में कुछ मशहूर व्यंजन जो कि अपने आप में प्रसिद्ध हैं जैसे 'सूरज की दाल' जो कि दाल चाट भंडार पर उपलब्ध होती है और विभिन प्रकार की कचौड़ी सब्जी एवं हलवा विशेष रूप से पर्यटकों को अपनी तरफ खींचते हैं। यहां पर

115 साल पुरानी मिठाई की दुकान भी जो कि 'पंडित जी मिठाई' की दुकान के नाम से जानी जाती है जिसकी रबड़ी का नाम सुनते ही मुंह में एकाएक पानी आ जाता है। इस दुकान की खास बात यह है कि यहां पर जो भी खान–पान की सामग्री उपलब्ध होती है वह व्रत के दौरान भी खाई जा सकती है। हर की पौड़ी एवं हरिद्वार की एक विशेष प्रथा यह भी है कि यहां पर खान–पान की सामग्री को 'मालू के पत्ते' पर परोसा जाता है जो कि न सिर्फ खाने का स्वाद बढ़ाता है बल्कि पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य में

मलायू स्ट्रीट फूड, वाराणसी

किनारे वाला

साफ–सुथरा और सही ढंग से इसका निस्तारण भी हो जाता है।

इस यात्रा का अगला पड़ाव त्रिवेणी संगम प्रयागराज उत्तर प्रदेश रहा जो कि अपने आप में एक विशेष आस्था का प्रतीक है जहां गंगा, यमुना और लुप्त सरस्वती का अद्भुत संगम होता है। यहां पर सदियों से चले आ रहे विभिन्न प्रकार की दुकानें और व्यवसाय दिखाई देते हैं जो कि पुश्तैनी व्यवसाई हैं और पुश्त दर पुश्त वही व्यवसाय करते हुए आ रहे हैं। यहां पर भी कुछ बेहद प्रसिद्ध खान–पान की दुकाने हैं जिनमें विशेष है 'नेतराम मूलचंद कचौरी सब्जी', 'हीरा हलवाई' जो कि अपनी प्रसिद्ध समोसे और नमकीन के लिए बेहद चर्चित है, 'सैनिक स्वीट्स' जहां पर विभिन्न प्रकार के हलुए का स्वाद ले सकते हैं और यादव दिलदार सिकौड़ावाला जो अपनी मूंग दाल के बड़ों के लिए प्रसिद्ध है।

आगे बढ़ते हुए हमारा सामना होता है वाराणसी से जो कि धरती पर सबसे पुराने जीवंत शहरों में माना जाता है यहां पर 'लक्ष्मी चाय वाला' सबसे पुरानी चाय की दुकान मानी जाती है जहां पर गर्मा–गरम चाय विभिन्न प्रकार के बन–मस्का के साथ पेश की जाती है। यहां पर एक विशेष प्रकार का खान–पान जिसे 'मलायू' कहते हैं यह भी बनारस में बहुत प्रसिद्ध है और पुराने शहरों में सबसे पुरानी मिठाई की दुकान 'श्री राम चंद्र भंडार' के नाम से प्रसिद्ध है जहां पर विभिन प्रकार के मिष्ठान अपने रसीले स्वरूप में दिखाई देते हैं। हम सब जानते हैं कि 'खाइके पान बनारस वाला' इस गाने ने जो धूम मचाई थी वह बनारस के हर गली नुक्कड पर पान की दुकानों में दिखाई देती हैं जहां लोग जी भर–भर कर पान खाते हुए दिखाई देंगे।

थोड़ा और आगे बढ़ते हुए जब टीम मैदानी इलाकों में पहुंचती है तो पटना में लिट्टी–चोखे के अद्भुत स्वाद सबका स्वागत करते हैं। लिट्टी–चोखा बिहार ही नहीं बल्कि पूरे देश में बेहद लोकप्रिय है। पटना में एक बहुत पुरानी दुकान है जिसका नाम 'पुरानी लिट्टी दुकान' है जिन्होंने लिट्टी–चोखा का मूल स्वाद सदियों से संजोए हुए रखा है। यह पुरानी दुकान अपने देहाती और पर्यावरण के अनुकूल खान–पान परोसने के लिए प्रशंसा का पात्र भी है। इसके अलावा पटना में आलू–कचालू, भूंजा कबाब भी आपको हर जगह दिखाई देंगे और लोगों के बीच बहुत प्रसिद्ध है।

मालू के पत्ते में परोसा गया रामफल

गंगा के अंतिम चरणों में जब यात्रा कोलकाता पहुंचती है तब आप वहां के रसगुल्ले, संदेश, खीर कदम, भापा दोई और चनर जिलोपी जैसे स्वादिष्ट व्यंजनों के बिना रह नहीं सकते हैं। कोलकाता के सबसे पुरानी दुकानों का नाम है 'गिरीश चंद्र और नकुर चंद्र', 'केसी दास' और अन्य दुकानें हैं जो कि स्वादिष्ट व्यंजन जैसे छेने की मिठाई के लिए बहुचर्चित हैं। कोलकाता जाएं और फिश–फ्राई का नाम न आए ऐसा हो नहीं सकता है और विभिन्न रेस्टोरेंट में और सड़क किनारे की दुकानों पर आप को फिश–फ्राई और माछेर झोल का स्वाद लेते बंगाली बाबू दिखाई देते हैं।

पुरानी लिट्टी दुकान (पटना, बिहार) पर श्री अनुभव सपरा

इस प्रकार गंगा किनारे के कुछ विशेष प्रकार के खान–पान और जायकों का स्वाद हम आपके समाने लेकर आए हैं जिससे कि आप पुनः गंगा और उसकी संस्कृति, उसकी धरोहर और विशेषकर लोगों के बीच प्रसिद्ध व्यंजनों से रूबरू होंगे। ये व्यंजन और खान–पान हर समुदाय, जाति और भाषा के लोगों को एक सूत्र में बांधते हैं और उस जगह की संस्कृति को बेहद सुंदर तरीके से उभारकर लाते हैं और सहीं मायने में यही भारत की विभिन्न में एकता को दर्शाता है और देशी की विरासत को बेहद विहंगम तरीके से उभारकर सामने लाता है। गंगा एक ऐसा जोड़ है जो देश के हर नागरिक को अपने प्रति एक चुम्बक की तरह खींचती है और एक डोर में बांधे रखने में विशेष भूमिका निभाती है। इस लेख के द्वारा हम आपके लिए गंगा किनारे वाले कुछ मशहूर जायकों को प्रस्तुत कर रहे हैं इस आशय के साथ कि यह न सिर्फ आपके मुंह में पानी लाएंगे बल्कि जब भी आप उन क्षेत्रों में जाएंगे उनका आनंद लेंगे और आपका गंगा से जुड़ाव और गहरा और दिलचस्प हो जाएगा।

WORLD ENVIRONMENT DAY

Creating Awareness on

"Our cosmic oasis, cosmic blue pearl the most beautiful planet in the universe all the continents and all the oceans united we stand as flora and fauna united we stand as species of one earth different cultures, beliefs and ways we are humans, the earth is our home all the people and the nations of the world all for one and one for all united we unfurl the blue marble flag"

An Earth Anthem penned by poet Abhay K is sung to celebrate World Environment Day

World Environment Day is celebrated annually on 5th June and is the United Nations' principal vehicle for encouraging awareness and action for the protection of the environment. This has been a platform for raising awareness on environmental issues such as marine pollution, human overpopulation, global warming, sustainable consumption and wildlife crime. World Environment Day is a global platform for public outreach, with participation from over 143 countries annually. Each year, the program has provided a theme and forum for businesses, non-government organizations, communities, governments and celebrities to advocate environmental causes.

Environment is a major issue, which affects the well-being of people and economic development throughout the world. The celebration of this day provides an opportunity to broaden the basis for an enlightened opinion and responsible conduct by individuals, enterprises and communities in preserving and enhancing the environment. The year 1972 marked a turning point in the development of international environmental politics, with the first major conference on environmental issues, known as the Conference on the Human Environment, or the Stockholm Conference. Later that year, on 15 December, the General Assembly adopted a resolution designating June 5 as World Environment Day and urging "Governments and the organizations in the United Nations system to undertake on that day every year world-wide activities reaffirming their concern for the preservation and enhancement of the environment, with a view to deepening environmental awareness.

Every year the Environment day is celebrated with a different theme, which enables the focus on dedicated

area of environment conservation. The theme for World Environment Day 2021 is 'Ecosystem Restoration'. An ecosystem is a community of plants and animals interacting with each other in a given area, and also with their non-living environments. The non-living environments include weather, earth, sun, soil, climate and atmosphere. The ecosystem relates to the way that all these different organisms live in close proximity to each other and how they interact with each other.

Ecosystem restoration means preventing, halting, and reversing this damage – to go from exploiting nature to healing it. Ecosystem restoration also means assisting in the recovery of ecosystems that have been degraded or destroyed, as well as conserving the ecosystems that are still intact. Restoration can happen in many ways – for example through actively planting or by removing pressures so that nature can recover on its own.

River Ganga has a unique ecosystem that provides various services, which contribute to the nation's economy directly and indirectly. These included provisioning of services such as food and water; regulating services such as flood and disease control; cultural services such as spiritual, recreational, and cultural benefits; and supporting services, such as nutrient cycling, that maintain the conditions for life on Earth. The river created vast plains of fertile land which attracted people from Central Asia to settle. Over the time several urban settlements came on the banks of the river. The river basin is one of the most thickly populated areas of the world. It remained source of pure freshwater and that of economic, spiritual and cultural activities since time immemorial. It sustains thousands of aquatic species of flora and fauna including many endemic and charismatic mega-fauna like the Gangetic dolphin, Gharials etc

International events are held to safeguard our river and its ecosystem but there is need to valuate these services provided by the Ganga river to understand its true value and take action in this regard.

Ecosystem Services provided by rivers

WORLD OCEANS DAY 2021

The oceans cover over 70% of the planet. It is our life source, supporting humanity's sustenance and that of every other organism on earth. The ocean produces at least 50% of the planet's oxygen, it is home to most of earth's biodiversity, and is the main source of protein for more than a billion people around the world. Not to mention, the ocean is key to our economy with an estimated 40 million people being employed by ocean-based industries by 2030. Oceans cover three quarters of the Earth's surface, contain 97 per cent of the Earth's water, and represent 99 per cent of the living space on the planet by volume.

The world's oceans – their temperature, chemistry, currents and life – drive global systems that make the Earth habitable for humankind. Our rainwater, drinking water, weather, climate, coastlines, much of our food, and even the oxygen in the air we breathe, are all ultimately provided and regulated by the sea. Throughout history, oceans and seas have been vital conduits for trade and transportation. With 90% of big fish populations depleted, and 50% of coral reefs destroyed, we are taking more from the ocean than can be replenished. To protect and preserve the ocean and all it sustains, we must create a new balance, rooted in true understanding of the ocean and how humanity relates to it. We must build a connection to the ocean that is inclusive, innovative, and informed by lessons from the past.

Careful management of this essential global resource is a key feature of a sustainable future. However, at the current time, there is a continuous deterioration of coastal waters owing to pollution and ocean acidification, which has an adversarial effect on the functioning of ecosystems and biodiversity. This is also negatively impacting small scale fisheries. Even with all its benefits, the ocean is now in need of support

Life and Livelihood dependence of people on oceans

Agriculture fields along the Ocean in Sundarbans

Satellite image of Sundarbans along Bay of Bengal, forming largest Delta of World

To create awareness on the oceans protection, the UN General Assembly designated 8 June as World Oceans Day. The concept of a 'World Oceans Day' was first proposed in 1992 at the Earth Summit in Rio de Janeiro as a way to celebrate our world's shared ocean and our personal connection to the sea, as well as to raise awareness about the crucial role the ocean plays in our lives and the important ways people can help protect it. "The Ocean: Life and Livelihoods" is the theme for World Oceans Day 2021, as well as a declaration of intentions that launches a decade of challenges to get the Sustainable Development Goal 14, "Conserve and sustainably use the oceans, seas and marine resources", by 2030.

The journey of River Ganga also ends on Sagar Island, where the river meets the ocean, called as Gangasagar which is also a place of Hindu pilgrimage. Every year on the day of Makar Sankranti (14 January), hundreds of thousands of Hindus gather to take a holy dip at the confluence of river Ganges and Bay of Bengal and offer prayers (puja) in the Kapil Muni Temple. The Gangasagar pilgrimage and fair is the second largest congregation of mankind after the triennial ritual bathing of Kumbha Mela.

It is a well-known fact that, the pollution of rivers ends up in the ocean. Plastic, heavy metals and all kinds of chemical products destroy sea life and contribute to the acidification and suffocation of a body of water that is vital for the balance of the planet. It is estimated that about 85% of global marine pollution is caused by human activities on the land surface, as 90% of the pollutants in this activity are transported by rivers to the sea. According to new research by an international team of scientists it was found out that with the combined flows of the Brahmaputra and Meghna rivers, the Ganga river could be responsible for up to 3 billion microplastic particles entering the Bay of Bengal every day.

The interventions under Namami Gange focussing on different aspect of River Rejuvenation are contributing towards conserving the river's ecosystem and ocean's as well. The initiative on pollution abatement through providing sewerage infrastructure and solid waste management, will help in reducing the load on the ocean.

नदी पुनरुद्धार एवं जन–जागरण अभियान–

जन–जागरण अभियान– हम सबके लिए गंगा अनादि काल से ही आस्था और भारत की संस्कृति का प्रतीक रही है। हालांकि पिछले कुछ दशकों में तेजी से बढ़ते विकास के कदमों ने नदियों और पर्यावरण को पीछे धकेल दिया है और यहां तक कि बेलगाम विकास के मंजरों ने नदी पारिस्थितिकी और पर्यावरण को खतरे में भी डाल दिया है। नमामि गंगे कार्यक्रम ने एक बार पुनः लोगों के दिलों और दिमाग में गंगा को न सिर्फ जीवंत किया है बल्कि गंगा की सफाई, उसका पुनरुद्धार और साथ ही साथ पर्यावरण संरक्षण को एक केंद्र बिंदु के रूप में उभारने में विशेष भूमिका निभाई है। आज न सिर्फ बड़े, बच्चे एवं युवा नदियों के प्रति जागरूक हैं अपितु वन एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए भी सजग हो गए हैं और इस विषय पर गहन चिंतन भी हो रहा है। नमामि गंगे कार्यक्रम के चलते पिछले करीब 6 वर्षों में हर दिल, हर घर में गंगा एक बार फिर से लोगों के मानस पटल पर अंकित हो गई है और हर तरफ गंगा के प्रति आस्था और विश्वास बढ़–चढ़कर सामने आया है। गंगा बेसिन में खासकर गंगा किनारे विभिन्न प्रकार के जन–जागरण के कार्यक्रम गली–मोहल्ले, शहरों और गांवों में दिखाई दे

उत्तराखंड राज्य से रिपोर्ट "हरेला पर्व" (16 जुलाई, 2021)

दिनांक 16.07.2021 को उत्तराखण्ड राज्य के महत्वपूर्ण लोक पर्व 'हरेला' के अवसर पर उत्तराखण्ड के मा0 मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु मा0 वन मंत्री डॉ0 हरक सिंह रावत जी के साथ मिलकर वृक्षारोपण किया गया एवं प्रदेशवासियों से आग्रह किया गया कि एक–दूसरे को उपहार स्वरूप पौधा भेंट करें एवं हरेला पर्व पर सबको पेड़ लगाने का सन्देश दिया गया साथ ही अवगत कराया गया कि उत्तराखण्ड संस्कृति और प्रकृति का केंद्र भी है, यहां से पर्यावरण संरक्षण का संदेश विश्व भर में जाए, इसके लिए हमें वृक्षारोपण एवं अनेक सामाजिक कार्यों में अपना योगदान देना होगा। इस अवसर पर मा0 पेयजल मंत्री श्री बिशन सिंह चुफाल द्वारा भी डीडीहाट विधानसभा के बीसाबजेड़ क्षेत्र में राजकीय इण्टर कॉलेज बीसाबजेड में वृक्षारोपण किया गया। साथ ही राज्य परियोजना प्रबन्धन ग्रुप, नमामि गंगे उत्तराखण्ड में सूचीबद्ध 03 विश्वविद्यालय एवं 23 महाविद्यालयों में प्रकृति संरक्षण के लोकपर्व 'हरेला' पर कोविड–19 की सावधानियों को ध्यान में रखते हुए छात्र–छात्राओं एवं अध्यापकों द्वारा अपने–अपने घरों व महाविद्यालय परिसर में पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

पतित पावन मां गंगा नदी के महत्वपूर्ण पर्वों में एक "गंगा दशहरा" पर्व इस वर्ष दिनांक 20.06.2021 को मनाया गया। "गंगा दशहरा" के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय नदी गंगा एवं इसकी सहायक नदियों की स्वच्छता एवं संरक्षण हेतु जनमानस में जागरूकता एवं गंगा नदी के प्रति जनमानस में गर्व एवं स्वामित्व की भावना को उजागर करने के उद्देश्य से राज्य परियोजना प्रबंधक ग्रुप नमामि गंगे, उत्तराखंड में सूचीबद्ध 03 विश्वविद्यालय एवं 23 महाविद्यालयों के साथ मिलकर वर्चुवल माध्यम से गंगा क्विज, पेंटिंग प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, गंगा शपथ एवं गंगा स्वच्छता संबंधित कार्यक्रम सूचना, शिक्षा एवं संचार (आई.ई.सी.) गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष्य में चंडीघाट, हरिद्वार में एवं उत्तराखंड जल संस्थान पौड़ी गढ़वाल द्वारा भी गंगा शपथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

स्वामी विवेकानंद राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय लोहाघाट गंगा दशहरा एवं विश्व जल दिवस पर एक संगोष्ठी एवं क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में पर्यावरणविद श्री चंदन सिंह नयाल रहे, उन्होंने पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने हेतु प्रेरित किया तथा ग्लेशियरों के टूटने पर चिंता व्यक्त की। महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर संगीता गुप्ता ने सभी छात्र–छात्राओं को वृक्षारोपण के लिए और समाज में जागृति का आह्वान किया उन्होंने कहा कि जल है तो कल है। इस अवसर पर 60 से अधिक छात्र–छात्राएं अध्यापक और समाज के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने प्रतिभाग किया। छात्रों के ज्ञान वर्धन हेतु एक क्विज प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें 52 छात्रों ने प्रतिभाग किया। इस क्विज प्रतियोगिता का विषय नदी संरक्षण और नदियों से जुड़ी हुई जानकारी को छात्रों के मध्य साझा करना था।

मा. मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी एवं मा. वन मंत्री डॉ. हरक सिंह रावत द्वारा वृक्षारोपण

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अगस्त्यमुनि, गंगा दशहरा पर गंगा शपथ

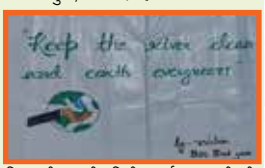

निशा बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष, सरकारी पी. जी. कॉलेज, बागेश्वर द्वारा गंगा शपथ

मा. पेयजल मंत्री श्री बिशन सिंह चुफाल द्वारा भी डीडीहाट बीसाबजेड़ क्षेत्र में वृक्षारोपण किया गया

बिहार राज्य से रिपोर्ट

बिहार में नमामि गंगे के तहत कई प्रदूषण नियंत्रण परियोजनाओं पर कार्य चल रहा है खासकर पटना, छपरा, बेगूसराय और अन्य शहरों में जो गंगा किनारे बसे हुए हैं। इसके साथ ही साथ बिहार में विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून, 2021 को मनाया गया जिसमें स्थानीय निकायों के कार्यकर्ताओं ने वृक्षारोपण अभियान चलाया। गत माह में बुडको एवं प्रमुख सचिव बिहार ने कार्यों की प्रगति की समीक्षा की और जमीनी स्तर पर भी कार्य की प्रगति का निरीक्षण किया।

विश्व पर्यावरण दिवस के दिन पौधारोपण किया गया

एमडी बुडको के द्वारा कार्य स्थल का दौरा (सैदपुर पटना में रोड मरम्मत का काम)

पेपर कवरेज रिपोर्ट

गोपालगंज आरएफडी की आभा

रिपोर्ट माननीय उपमुख्यमंत्री बिहार द्वारा कार्य स्थल का दौरा

पर्यावरण संरक्षण

राज्यों से रिपोर्ट

रहे हैं जहां बच्चों से लेकर बड़ों तक हर एक गंगा संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता सुनिश्चित करते हुए दिखाई दे रहे हैं और साथ ही साथ कई वृहद गतिविधियों जैसे श्रमदान, वृक्षारोपण, गंगा स्वच्छता रैली, गंगा स्वच्छता शपथ, गंगा संगोष्ठी एवं अन्य जन–चेतना के कार्यक्रम हर दिन दिखाई देते हैं। गंगा किनारे के 5 राज्यों– उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड एवं पश्चिम बंगाल में नमामि गंगे से जुड़े विभिन्न हितधारक एवं सहयोगी संगठन गांवो–गांवों में दूर–दराज तक गंगा संरक्षण का संदेश पहुंचाने में लगे हुए हैं और लोगों को गंगा की महत्ता और उसको साफ रखने के लिए उन्हें प्रेरित कर रहे हैं। सही मायनों में गंगा एक बार फिर अपने सही रूप में पहचानी जा रही है और हर कोई उसकी महत्ता को और उसकी धरोहर को संजो के रखने के लिए प्रतिबद्ध हो रहे हैं। नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत गंगा संरक्षण का अभियान एक वृहद जन–आंदोलन के रूप में उभरकर सामने आ रहा है और गंगा की जय–जयकार हर कोने में गूंज रही है। गत जून–जुलाई, 2021 के महीने में गंगा संरक्षण के तहत जन–जागरण कार्यक्रमों में गंगा प्रदेशों से एक रिपोर्ट प्रस्तुत है।

उत्तर प्रदेश राज्य से रिपोर्ट

केंद्रीय जल शक्ति मंत्री का उत्तर प्रदेश दौरा (3 जुलाई)

3 जुलाई 2021 को लखनऊ में माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश श्री योगी आदित्यनाथ एवं माननीय केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने उत्तर प्रदेश के माननीय जल शक्ति मंत्री श्री महेंद्र सिंह के साथ, उच्च अधिकारियों एवं सिंचाई विभाग के संग नमामि गंगे एवं ग्रामीण जल जीवन मिशन 'हर घर नल से जल' परियोजनाओं की समीक्षा की। उत्तर प्रदेश में मा. मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में वृहद वृक्षारोपण अभियान के तहत एक दिन में 25 करोड़ वृक्षारोपण के अंतर्गत चित्रकूट में केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत के साथ वृक्षारोपण किया।

लखनऊ में 3 जुलाई को समीक्षा बैठक

मा. मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश द्वारा वृक्षारोपण

माननीय जल शक्ति मंत्री द्वारा चित्रकूट में गंगा किनारे वृक्षारोपण

राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस (10 जुलाई)

राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस के अवसर पर सिफरी द्वारा गंगा नदी में मछलियों को छोड़ा गया। केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), प्रयागराज के द्वारा दिनांक 10 जुलाई 2021 को राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस के अवसर पर रैंचिंग सह जन जागरूकता का आयोजन संगम नोज पर किया गया। कार्यक्रम में श्रीमती अभिलाषा गुप्ता नंदी (महापौर प्रयागराज) ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया और सभा को संबोधित किया। उन्होने गंगा के साथ – साथ मछली के महत्व को बताया और लोंगों से गंगा को प्रदूषण मुक्त रखने को कहा। इस अवसर पर गंगा नदी में विलुप्त हो रहे मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण एवम् संवर्धन को ध्यान में रखते हुए गंगा नदी में 3000 (तीन हजार) भारतीय प्रमुख कार्प – कतला, रोहू, मृगल मछलियों के बीज को गंगा नदी में छोड़ा गया। कार्यक्रम में संस्थान के केन्द्राध्यक्ष डा० डी एन झा ने उपस्थित लोगों को रैंचिंग और नमामि गंगे परियोजना के बारे में जानकारी दी। जिसके अन्तर्गत पुरे गंगा नदी में कम हो रहे महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियो के बीज का रैंचिंग होना रखा है साथ ही लोगो को गंगा के जैव विविधता और स्वच्छता के बारे में जागरूक करना है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री राजेश शर्मा संयोजक गंगा विचार मंच तथा प्रतिनिधि नमामि गंगे ने अपने सम्बोधन में गंगा को स्वच्छ रखने में किये जाने वाले विभिन्न प्रयासों की जानकारी दी तथा गंगा को निर्मल और अविरल बनाने के लिए लोगो से आह्वान किया। इस अवसर पर गंगा स्नान करने आये स्नानार्थियों और मछुआरों ने भी सभा में अपनी बातों को रखा और सभी ने गंगा के प्रति जागरूक होने के साथ ही गंगा को स्वच्छ रखने का संकल्प व्यक्त किया।

प्रयागराज में श्रीमती अभिलाषा गुप्ता नंदी द्वारा रैंचिंग और जन–जागरूकता कार्यक्रम

झारखंड राज्य से जन-जागरण कार्यक्रम पर रिपोर्ट

झारखंड के साहिबगंज में गंगा दशहरा के उपलक्ष्य में श्रद्धालुओं ने पारंपरिक रूप से गंगा में डुबकी लगाई और रामगढ़, बोकारो, धनबाद जैसे शहरों में गंगा आरती और गंगा पूजन का आयोजन किया। इसके साथ ही साथ विश्व योग दिवस के उपलक्ष्य में भी गंगा किनारे बसे साहिबगंज और अन्य जिलों रामगढ़, बोकारो में विभिन्न वर्गों के लोगों ने योग दिवस मनाया। साहिबगंज में श्री राम निवास यादव, उपायुक्त साहिबगंज, अनुरंजन किसपोट्टा, पुलिस अधीक्षक साहिबगंज, श्री मनीष रंजन तिवारी, जिला वन अधिकारी, साहिबगंज और अन्य स्थानीय अफसरों के साथ मिलकर योग की साधनाएं की। इसी श्रृंखला में धनबाद में भी विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों में भी गंगा दशहरा और योग दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम किए गए और जन–जागरूकता के तहत लोगों को योग और नदियों के बारे में जागृत किया। इस लेख के द्वारा कुछ जगहों पर हुए कार्यक्रमों की झलक पेश है।

साहिबगंज जिला अधिकारीगण 21 जून, 2021 योग दिवस के दिन योग करते हुए

रामगढ़ भैरवी नदी घाट पर रजरप्पा मंदिर के पास गंगा आरती

गोमिया, बोकारो में गंगा आरती

बोकारो में दामोदर घाट पर नगर परिषद अधिकारियों द्वारा श्रमदान

An awareness drive on River Ganga was organized on the occasion of International Yoga Day on 21st June 2021 on Sangam in Prayagraj by Ganga Vichar Manch volunteers who sensitized the people on the need for conserving Ganga and administered a pledge to keep Ganga and Yamuna clean and healthy

The work for rejuvenation of Kali River was started from Meerut on 23rd June 2021 in the presence of Shri Surender Singh, Commissioner, Meerut and Shri Raman Tyagi, the founder of Neer Foundation. This initiative is a shining example of Public – Private partnership to revive, restore and conserve rivers and their ecosystem

Shri Pankaj Kumar, Secretary, Ministry of Jal Shakti, chaired the monthly review meeting of various programs and projects including Namami Gange Programme on 23rd June 2021. The meeting was attended by Shri Ashok Kumar Singh, ED (Projects) NMCG, Central Water Commission representatives and state officials

A Concession Agreement was signed between EMIT Group - EMS, UPJN and NMCG on 24th June 20121 for development of an 18 MLD STP at Mirzapur and 21 MLD STP at Ghazipur in Uttar Pradesh under Hybrid Annuity model. Shri Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG, Shri Ashok Kumar Singh, ED (Project) NMCG, Shri Sushil Patel, Joint MD, UPJN were present

The volunteers of Nehru Yuva Kendra and Namami Gange carried out an awareness drive for Covid-19 vaccination on 27th June 2021 in Buxar, Bihar and also distributed masks and sanitizers to the locals. The dedicated cadres of NYKS are doing a yeoman's service in connecting people with Ganga rejuvenation and environmental protection

Shri Gajendra Singh Shekhawat, Hon'ble Union Minister for Ministry of Jal Shakti chaired the review meeting of NMCG projects on 2nd July 2021. The meeting was attended by Shri Pankaj Kumar, Secretary, Ministry of Jal Shakti, Shri Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG, Shri Ashok Kumar Singh, ED (Projects), NMCG, Shri Rozy Agarwal, ED (Finance), NMCG and other senior officials

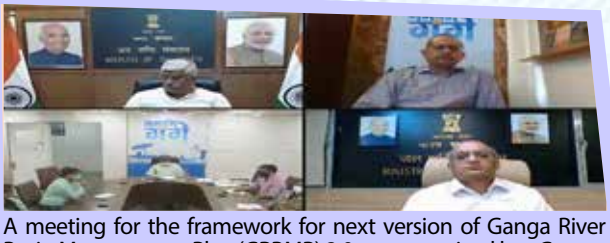

A meeting for the framework for next version of Ganga River Basin Management Plan (GRBMP) 2.0 was organized by cGanga. on 7th July 2021 which was chaired by Shri Gajendra Singh Shekhawat, Hon'ble Union Minister for Ministry of Jal Shakti. Shri Pankaj Kumar, Secretary, Ministry of Jal Shakti, Shri Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG, Dr. Abhay Karandikar, Director IIT Kanpur, Prof. Vinod Tare, founder head cGanga & others were present

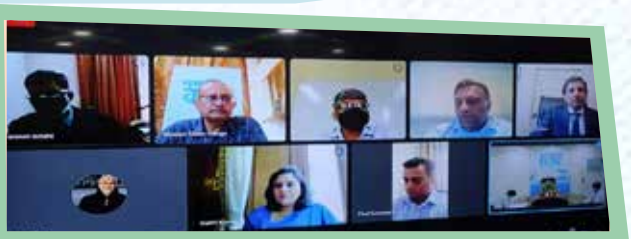

A joint meeting was held on 12 July 2021 between NMCG, High Commission of India in UK, cGanga, IIT Kanpur to discuss the agenda for upcoming Namami Gange exhibition in United Kingdom in October-November during the COP 2021. The meeting was graced by H. E. Gaitri Issar Kumar, High Commissioner of India in UK & Shri Rajiv Ranjan Mishra, DG-NMCG

NEWS DESK

[For June-July 2021]

A Memorandum of Understanding was signed on 15th July 2021 between NMCG and HESCO for 'Promotion of Livelihood Opportunities along the Ganga Basin and the use of Nature-based Solutions for Sustainability and Restoration of River Ecosystems', in the presence of Shri Rajiv Ranjan Mishra, DG-NMCG and Padma Bhushan Dr. Anil Joshi, HESCO

Shri Rajiv Ranjan Mishra, Director General, National Mission for Clean Ganga, released a report titled, "Potential of Geospatial Technologies for the Water Sector in India" on 20th July. The report outlines all major water related national level programmes, the adoption of geospatial technologies in these programmes and the challenges faced by the sector

With an aim to improve river's health and flow, a new capacity-building initiative on 'Making Water Sensitive Cities in Ganga Basin' was launched by NMCG in collaboration with Centre for Science and Environment (CSE) on 27th July. The key focus of the project will be Water Sensitive Urban Design and Planning & Urban Water Efficiency and Conservation

On the occasion of World Nature Conservation Day, the Ganga Task Force (GTF) personnel along with members of Ganga Vichar Manch organised a public awareness campaign & plantation drive at Salori STP, Prayagraj on 28th July. The purpose of plantation drive was to propagate the importance of conserving nature and its balanced ecosystem

A plantation drive was carried out by Ganga Mitras in Varanasi on 25th July 2021. Ganga Mitras, trained by Mahamana Malviya Ganga Research Centre, Banaras Hindu University, Varanasi, have been actively the spreading message of Ganga Rejuvenation and Water Conservation from the past 3 years

The progress review meeting for the INTACH Ganga Cultural Mapping projects was chaired by Shri Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG on 28th July 2021. The meeting was attended by Shri Brijesh Sikka, Consultant, Mrs Kritika Gahlawat, Project Officer, Shri Peeyush Gupta, Mrs Priyanka Jha, Mrs Hema Patel from NMCG & INTACH officials

A meeting for collaboration between UN Environment Programme -India & NMCG on Plastic Waste Management was chaired by Shri Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG on 29th July 2021. The meeting was attended by Shri Ashok Kumar Singh, ED (Projects), NMCG, Shri Atul Bagai, Head of country office, UNEP India, Dr. Divya Datt, Program UNEP India

A meeting on green strategic partnership with Royal Danish Embassy was held on 29th July 2021 in NMCG office. H. E. Steen Malthe Hansenansen, Minister Counsellor and Chargé de Mission, Embassy of Denmark in India, graced the meeting in the presence of Shri Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG, along with other senior officials from Danish embassy

FINANCING

Ganga River ecosystem is one of the oldest and most complex riverine system on the globe. The river Ganga apart from being a source of water, recreation and livelihood to millions, who live across its banks is also revered as a deity and worshiped as a Goddess who purifies the soul of those who come to offer their obeisance to her. A comparison of rivers across the world reveals that in comparison to about 51 crores (about 500 million) which live on Ganga belt and are dependent on it for economic activities, the other big rivers of the world have much lesser population on their banks like Yangtze (480 million), Thames (15 million), Rhine (58 million), Danube (83 million), Amazon (30 million), Mekong (70 million), Nile (257 million) and others support far less number of people. The treatment process systems for some of the bigger rivers have also been going on for decades – for Thames since 1960; for Yangtze since 2002; for Danube since 1998; in case of Rhine since last 30 years; for which some data is available – in comparison the real rejuvenation efforts of Ganga Basin have taken off only since 2014 only. The sheer number of dwellers along Ganga is humongous and therefore brings along its own set of problems.

The condition and deteriorating health of Ganga specially in the past three to four decades had been drawing attention of one and all and has led to some interventions starting from the first ever effort through Ganga Action Plan (GAP) launched in 1985 covering 25 towns along Ganga. This was followed by GAP II in 1993 which included tributaries like Yamuna, Gomati and others apart from Ganga. These programs were later merged into National River Conservation Plan in 1995 - 96 which took up schemes on 41 towns in Ganga region. A separate National Ganga River Basin Authority came into being in 2009 brought in World Bank assisted program and saw creation of National Mission for Clean Ganga-NMCG. During these programs, from 1985 to 2014, an amount of Rs 4000 crores only was spent majorly on construction of Sewerage treatment plants and associated infrastructure that too without operation and maintenance provisions leading to most of the infrastructure going into disuse. While all this was taken up, Ganga continued to groan with agony with all round pollution and ecological degradation. Rejuvenation of the holy river remained elusive and probably only a dream.

The Namami Gange Program, launched in 2014 is now reliving this dream of restoring the pristine and pure nature of this sacred river by taking up wholesome conservation and rejuvenation of the entire Ganga basin by multiple efforts including pollution abatement, continuous flow in Ganga and by improving the ecology of the entire river basin. Unlike the previous efforts which were restricted to mere creation of sewerage infrastructure and could spend a mere Rs. 4000 crores from 1985 to 2014, the Namami Gange Program for the first time ever addressed the realistic fund requirements for this humongous task and assigned a firm allocation of Rs. 20,000 crores for a five year period starting from 2014.

The program not only requires partnership and involvement of multi-level stakeholders and agencies but importantly a continuous, dedicated and non-lapsable funding route to take up multi-pronged interventions simultaneously. The program also envisages long term operation and maintenance of the various projects for sustaining the efforts and for ensuring continuous improvement in the river. As such, the committed funds under Namami Gange also provide for long term sustainability of the assets and interventions.

The new Finance model for Namami Gange: -

The finance model for funding Ganga Rejuvenation has various salient features:-

1. Non-lapsable Grants in Aid which continue to be available with the National Mission for Clean Ganga to fund the projects without interruptions
2. Clear cut allocations for major activities and interventions with authority to the Program Management for reallocation wherever necessary
3. Dedicated allocations of Rs 20,000 crores for a five year period to be drawn as per requirements annually
4. The allocations also provide for funding long term measures for maintaining the assets over a longer period for successful operation against defined outcomes
5. Breaking away from the past practice where the Ganga Rejuvenation efforts were borne both by Centre and state governments in the ratio of 70:30, the Namami Gange program is a Central Sector Scheme with 100% funding of the projects by the Central Government to ensure that the projects and interventions don't suffer for want of funds specially at State level
6. Authority to National Mission for Clean Ganga working through its Executive Committee headed by DG-NMCG to sanction projects worth Rs.1000 crores for speedy sanctions and quick grounding.
8. The NMCG in partnership with State authorities oversee the grounding of projects and efficient utilization of funds which is a sparkling model of cooperative federal nature of governance in the country
9. The program is also a unique model of hybrid financing - foreign funding through World Bank and JICA (Japanese funding) and Allocations by the Government through internal resources

The fund flow under Namami Gange -

1. The funds under Namami Gange program are provided by the Government of India on an annual basis to National Mission for Clean Ganga as per requirement assessed from the field spending units
2. The funds so received are kept with the accredited bankers and are released or expended based on the demand from State Missions, Executing agencies, various implementing agencies and other spending partners and units
3. To ensure that funds are not parked for long, a unique mechanism of Mother- Child account has been put

in place which enables the spending agencies to draw funds against an authority only and that at the point of actual expenditure

4. The State Missions further release funds to the Executing agencies based on their demand against physical achievement of projects

5. The Executing agencies like the Jal Nigams and other state agencies out of the funds released to them, release payments to the various construction agencies and vendors after due certification of work done against defined milestones

6. For centrally controlled projects, the funds are allocated directly to Executing agencies and partners who act as spending units making expenditure at their ends in terms of contractual agreements

7. Under Hybrid Annual Model, the funds are transferred to an Escrow account covering funds up to defined milestones which are drawn by the concessionaire after certification by the state agencies who are one of the partners to the contract. The Escrow account is an important measure to assure the concessionaire of committed payments during the construction period and thereafter

8. Unlike the Budgetary process applicable in Government of India where funds lapse by close of the Financial year, the unutilized funds are taken over to next financial cycles without interruptions. This enables liquidity at all times and at all levels speeding up grounding of projects as per standards

9. The NMCG maintains and finalizes the accounts under Namami Gange on commercial accounts basis as against the single accounting system prevalent in government which provides a true picture of receipts and expenditure of the program annually which are certified by the C & AG and finally laid before the two Houses of Parliament. Hence proper accountability and responsibility is maintained while utilizing government funds

The Funding pattern

The budget for Namami Gange Program is provided in the 'Demands for Grants' for the Union Ministry of Jal Shakti. The fund for the implementation of the program is budgeted as a separate budget line in the Demands for Grants. The funds are provided under the following budget heads: -

Externally Aided Projects (EAP) component – For carrying out various infrastructure and institutional development projects funded by International agencies like World Bank and Japan International Cooperation Agency (JICA)

- Non-Externally Aided Projects (Non-EAP) component
- National Ganga Plan (NGP) component
- Ghat works for Beautification of River Front (Ghat Works) component

Funds for the projects approved under World Bank Assisted National Ganga River Basin Programme (NGRBP) are being released under the budget component 'EAP'. World Bank has approved a loan of US$1 billion (US$1000 million) for the river Ganga rejuvenation programme (National Ganga River Basin Programme (NGRBP)). Initially, this loan was till 31 December 2019. On the request of NMCG, the loan is reduced to US$600 million and loan period is extended till 31 December 2021. Another loan of US$400 million has now been sanctioned as Ganga – II for taking up various infrastructure and institutional development projects for a period upto 31st December 2021.

Japan International Cooperation Agency (JICA) has extended a loan of Japanese Yen 32,571,000,000 for improving the water quality of river Yamuna in NCT of Delhi under Yamuna Action Plan-Phase III.

The Financial progress under Namami Gange

The unique financing model of Namami Gange Program has been catalytic in speeding up the physical progress and grounding of the various projects and interventions for Ganga Rejuvenation.

The graph in Figure 1 shows how the expenditure has continued to scale up from 2015 onwards with slight dip in the critical Covid years when despite all odds and multiple challenges, the Mission continued with healthy utilization of funds. Hence, under Namami Gange, the total expenditure logged in as on date is Rs. 10,248 crores in about 5 years which is more than double of Rs. 4000 crores which were spent in previous regimes in a period spanning over 20 years. It only goes on to show how the projects are taking shape on ground leading to changes in water quality and improvement in overall ecology around the river as greater progress on ground is fueling higher and higher demand and utilization of funds.

It is also a matter of great satisfaction that out of the total releases by the Government of Rs. 10,792 crores, the National Mission for Clean Ganga has utilized Rs. 10,248 crores which is a healthy 95 % utilization. This model of 100 % funding of projects by the Government of India has hugely facilitated the successful and timely implementation of projects as the executing agencies and the vendors are assured of timely payments under Namami Gange Program unlike in the past regimes when not only the quantum of funds was much lower but there were lack of committed funding lines.

Figure-1: A Glance at Namami Gange Financials

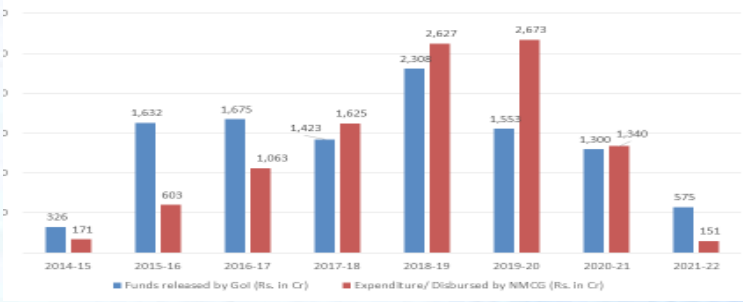

NATIONAL GEOPHYSICAL RESEARCH INSTITUTE - Partnering with NMCG

The National Geophysical Research Institute (NGRI), a constituent research laboratory of the Council of Scientific and Industrial Research (CSIR) was established in 1961 with the mission to carry out research in multidisciplinary areas of the highly complex structure and processes of the Earth system and its extensively interlinked subsystems. NGRI has the mandate to conduct research for public-good science to enable government agencies, public and private sector stakeholders to make informed decisions about use of geo-resources sustainably and improve preparedness and resilience to natural hazards. As a close understanding of Earth processes and its intersections with the growth and development of the human society only can secure the future, it is our vision to develop the knowledge base of Earth system processes and apply it to produce strategies to minimize loss of life and property from natural disaster as well as manage water, energy, and mineral resources for enhancing the quality of life.

The research activities fall broadly under three themes: Geodynamics, which revolve around investigating and modeling fundamental aspects of the Earth system and processes, Earthquake Hazards, which encompass features on the surface and subsurface of crust which may potentially endanger lives and properties through catastrophes like earthquakes and landslides as well as deterioration in pollution levels of groundwater and soil, changes in climatic conditions and associated environmental issues. The theme Natural Resources comprise implementation of techniques to identify primary geo-resources, which are the pillars of human civilization and fount of economic growth like groundwater, hydrocarbons as well as alternate energy sources and minerals.

Aquifer mapping- Discovering the palaeochannel

Palaeochannel is a remnant of an inactive river or stream channel that has been filled or buried by younger sediment. The sediments that the ancient channel is cut into or buried by can be unconsolidated, semi-consolidated, consolidated or lithified. Aquifer mapping is a multi-disciplinary holistic scientific approach for aquifer characterization. It leads to aquifer-based groundwater management. Mapping of aquifers helps determine the quantity and the quality of groundwater in a particular area, including: Vertical and lateral extent of aquifers.

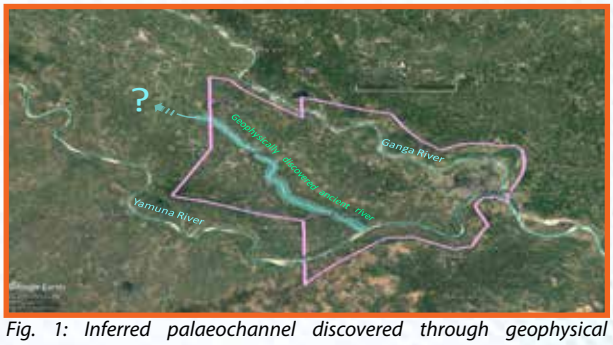

Fig. 1: Inferred palaeochannel discovered through geophysical investigations in the Ganga Yamuna Doab (blue dots indicate the boreholes drilled by CGWB for validation of the results). Inset: helicopter borne TEM study.

As a part of the National Aquifer Mapping and Management Programme of Central Ground Water Board, advanced geophysical studies were carried out by CSIR- National Geophysical Research Institute (NGRI), Hyderabad to delineate the subsurface aquifers in and around Prayagaraj. As a part of this study helicopter borne transient electromagnetic surveys (Heli-borne TEM) were done, based on which disposition of aquifers were studied. The studies helped in discovering an old river channel (palaeochannel) between Ganga and Yamuna (Fig.1).

Partnering with NMCG on the project "Data generation for aquifer mapping with focus on paleo-channels in parts of Ganga Yamuna Doab in Kaushambi-Kanpur stretch, Uttar Pradesh"

Aquifers in the Ganga Yamuna doab play an important role in sustaining the flows in these rivers. However, the disposition of aquifers and their interaction with the rivers is not very well understood yet.

Taking clues from the previous study in a smaller area, NGRI will further extend the investigations in the northwestern direction in the doab upto Kanpur (Fig.2) to trace the extension of the newly discovered palaeochannel under the aegis of National Mission for Clean Ganga.

The study is expected to provide newer insights into disposition of the aquifers; extent and characteristics of the palaeochannel; and possible interaction of the aquifers with Ganga and Yamuna Rivers. This study is expected to help in developing plans for effective augmentation of flow for rejuvenation of Ganga through managed aquifer recharge. Heliborne geophysical survey in Ganga-Yamuna Doab is successfully completed by 31st March 2021. The data QA/QC has been carried out on daily basis in the field. Besides network of HT power lines, NGRI have acquired AEM data with excellent quality. Airborne electromagnetic (AEM) being sensitive to conductivity are prudent to be a potential tool for rapid mapping of sub-surface in 3D with high resolution (meter scale) knowledge base.

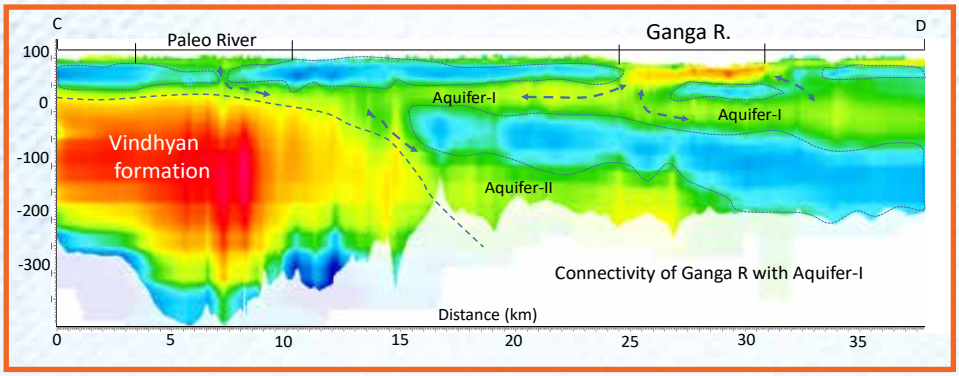

Fig.2: Subsurface disposition of aquifers and their interaction with the Ganga river as inferred from the heliborne geophysical study

ECOSYSTEM SERVICES

Valuation of Natural Resources

Ecosystem services are a way of accounting for and communicating about the things we get from natural systems; the things that we value from nature, from forests and rivers, air, soil, water, wildlife, solitude, and so on.

Schematic displaying the four categories of ecosystem services

Riparian ecosystem services are under significant pressure from multiple threats including anthropogenic activities such as streamflow regulation, excessive pollution, sand mining, water diversion, spread of invasive species and land use changes in the catchment zones that exacerbate risks including climate change. Degradation and disintegration of freshwater riparian habitats have had a negative impact on the ability of river systems to offer and regulate ecosystem services.

Therefore, restoration of floodplains and river valleys would represent an important opportunity to mitigate the effects of riparian degradation. Most river restoration projects aim to improve habitat or water quality but miss strengthening important riparian ecosystem services.

Understanding of the value of ecosystem services of rivers is confounded by its differences with terrestrial ecosystems, hydrogeomorphic features, flow characteristics, and flood plain interactions. Acknowledging, valuing, and reflecting the value of these tangible and intangible services in policy choices is fundamental to achieving sustainable and equitable water management in river basins. Different systems of valuation, and metrics of values for water are arrived at for different use categories or purposes. Failure in reconciling these key differences is the root cause for limited successes for political neglect and limited successes in integrated water management.

Ecosystem Services Provided by Ganga River Basin

River Ganga is a unique ecosystem that provides various services contributing to the nation's economy directly and indirectly. These include provisioning of services such as food and water; regulating services such as flood and disease control; cultural services such as spiritual, recreational, and cultural benefits; and supporting services, such as nutrient cycling, that maintain the conditions for life on Earth.

Ecosystem Services

The river created vast plains of **fertile land** which attracted people from Central Asia to settle. Over the time several urban settlements came on the banks of the river. The river basin is one of the most thickly populated areas of the world. It remained source of **pure freshwater** and that of **economic, spiritual and cultural activities** since time immemorial. It sustains thousands of **aquatic species of flora and fauna** including many endemic and charismatic mega-fauna like the **Ganges Dolphin, Gavialis** etc. River Ganga is not only the cultural and spiritual mainstay for India but also provides economic sustenance, water and food security to more than 43% of country's population. It is a high time to introspect and analyse the cost-benefits of the developmental activities in the name of flood control and water resource development in Ganga Basin. We should have minimum interference with our natural systems especially rivers which are not only our life line but have been cradle of our civilization. The Namami Gange is the comprehensive project which is working on the wholesome of the river as a system. Considering the significance and appreciating the concern about environmental degradation of the river, the Namami Gange is based on the multi-sectoral approach for Ganga rejuvenation adopting basin-based planning to address the challenges of quality and quantity of water. The vision is to restore its wholesomeness defined in terms of "Nirmal Dhara - unpolluted flow", "Aviral Dhara- continuous flow", and recognition of the river as geological and ecological entity. For the first time, **notification for ecological flow** was issued for River Ganga in October 2018, formally establishing the right of river over its own water which has far reaching implications for ensuring river health in long term. We all know the importance of wetlands and services they provide to environment and communities, under the mission we have sanctioned different projects to map and conserve these wetlands which includes flood plain wetlands as well as urban wetlands. The role of forests in maintaining the river health cannot be ignored, keeping that in mind for the first-time **scientific plan for afforestation** along Ganga was made with the help of FRI which is being implemented through states. A **comprehensive project** is under implementation in partnership with Wildlife Institute of India (WII) to **map biodiversity hotspot** for the entire length of Ganga and scientific improvement of habitat, species and ensure community participation through Ganga Prahari program.

Workshop

A workshop on "Economic Valuation of Environmental Services- Experiences to Strengthen Environmental Services in the National River Ganga Basin" was organised by NMCG under partnership with World Bank on 13th July, 2021. The workshop was chaired by Shri. Rajiv Ranjan Mishra, Director General, NMCG, co-chaired by Shri D.P. Mathuria, Executive Director-Technical, NMCG, Government of India and moderated by Xavier Chauvot De Beauchene, Lead Water Supply and Sanitation Specialist.

वाराणसी

आज का दिन

हिन्दुस्तान 04

काशी में रोपे गए 19 लाख छाया और फलदार पौधे

नगर निगम के 153 पार्कों में लगाए पौधे

millenniumpost

Delhi Edition

7 July 2021

Unprecedented success

The proactive path adopted by the present government has revolutionised the water sector through its people-driven initiatives

RATTAN LAL KATARIA

It is a matter of great pride for the country that, in less than two years, about 4.22 crore additional rural households have already been provided with new tap water connections

गंगा किनारे पर्यटन विकास के लिए बनेगा गंगा सर्किट

पर्यटन विकास परियोजनाएं नवंबर तक पूरी करने के निर्देश

अमर उजाला ब्यूरो

केंद्रीय मंत्री प्रहलाद पटेल ने समीक्षा की

लखनऊ। प्रदेश में गंगा किनारे स्थित इलाकों में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए करोड़ की लागत से गंगा सर्किट बनाया जाएगा। वहीं अयोध्या में 299 करोड़ की लागत से सरयू नदी किनारे 9 किलोमीटर तक घाटों के निर्माण के साथ पर्यटकों के लिए सुविधाएं विकसित की जाएंगी। केंद्रीय पर्यटन मंत्री की ओर से शुक्रवार को आयोजित पर्यटन विभाग की समीक्षा बैठक में प्रदेश के पर्यटन विभाग की ओर से केंद्र सरकार की स्वदेश दर्शन योजना के तहत प्रदेश के लिए नई पर्यटन विकास योजनाओं का प्रस्तुतीकरण किया गया।

पर्यटन भवन के सभागार में प्रदेश के पर्यटन मंत्री नीलकंठ तिवारी की मौजूदगी में आयोजित बैठक में केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री प्रहलाद पटेल ने केंद्र सरकार की पर्यटन विकास योजनाओं के तहत संचालित परियोजनाओं का कार्य नवंबर 2021 तक पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि परियोजनाएं निर्धारित मानक और गुणवत्ता के अनुसार पूरी होनी चाहिए। पटेल ने शुक्रवार को प्रदेश के पर्यटन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नीलकंठ तिवारी की मौजूदगी में केंद्र की पर्यटन विकास योजनाओं की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि प्रदेश की ओर से प्रस्तावित नई पर्यटन योजनाओं से पर्यटन का विकास होगा, देशी-विदेशी पर्यटकों को विश्वस्तरीय सुविधाएं मिलेंगी और लाखों लोगों को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

काली बुला रही है

598 किमी

110 बहुरोक

07 दिन

2

दैनिक जागरण

हरी चुनरिया ओढ़कर निकलेगी काली

नदी के किनारों की 200 हेक्टेयर भूमि पर होगा वनीकरण, एक हेक्टेयर में रोपे जाते हैं 1100 पौधे, गूलर व कठजामुन पर जोर

जिम्मेदारी रखा सहायता समूह को

कमिश्नर-जिलाधिकारी ने फावड़ा चलाकर किया श्रमदान का शुभारंभ

Cities along rivers urged to include conservation plans

Policy document from Clean Ganga mission sets out norms

JACOB KOSHY

NEW DELHI

Cities situated on river banks will have to incorporate river conservation plans when they prepare their Master Plans, says a policy document from the National Mission for Clean Ganga.

The guide document, while spelling out provisions in the National Water Policy that emphasise the need for such plans, also says that these "river-sensitive" plans must be practical and consider questions of encroachment and land ownership.

"There is a need for a systematic rehabilitation plan for such encroaching entities that emphasises on alternative livelihood options in addition to a relocation strategy. Planners should make every attempt to engage with such entities during the preparation of the Master Plan in order to develop empathetic and humane solutions," the document notes.

The recommendations are currently for towns that are on the main stem of the Ganga. There are, as per the estimate of the policy document, 97 of them encompassing five States – Uttarakhand, Uttar Pradesh, Bihar, Jharkhand, West Bengal.

Towns along the main stem of the Ganga are in focus.

The plan must also clarify on land ownership. A key aspect of conserving and protecting river and riverine resources involves increasing green cover in the vicinity of the river by creating green buffers, removing concrete structures and employing "green infrastructure."

However, implementing such solutions will require restrictions on the Floor Area Ratio, ground coverage and setting limits on the maximum permissible heights of buildings. "Ascertaining the land ownership in these areas is, therefore, important to avoid legal complications while the Plan is being implemented," says the document.

The Master Plan should not mandate specific technologies, but it can "create an environment" for facilitating the use of state-of-the-art technologies for river management. These include satellite-based monitoring of water quality; artificial intelligence for riverine biodiversity mapping; big data and citizen science for river-health monitoring; and unmanned aerial vehicles for floodplain mapping. These were being used across the world successfully.

Cities with an ongoing Master Plan tenure ought to be conducting an "immediate analysis" of the extent to which these the river guidelines could have been adopted and this "will help" in incorporating the appropriate revisions when the current plan is reviewed.

'जल बचाएं, जीवन बचाएं' का पोस्टर किया गया लांच

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

चौसा।

जल संचय पर पोस्टर लॉन्च करते हुए जिलाधिकारी अमन समीर व अन्य अधिकारी।

बक्सर जिलाधिकारी अमन समीर द्वारा समाहरणालय सभागार कक्ष में जल संचय विषय पर बैठक की गई। जिलाधिकारी महोदय द्वारा जल बचाएं, जीवन बचाएं का पोस्टर भी लांच किया गया। उपस्थित स्वयंसेवकों को उप विकास आयुक्त डॉ योगेश कुमार सागर ने संबोधित किये। डीआरडीए के अभिषेक कुमार द्वारा भी इस विषय पर अपने विचार व्यक्त किया गया। नमामि गंगे के परियोजना पदाधिकारी शैलेश कुमार राय, राष्ट्रीय सेवा योजना के एनएसएस टीम लीडर सुन्दरम कुमार, नेहरू युवा केंद के स्वयंसेवक अरूण कुमार, नीतीश कुमार सहित अन्य उपस्थित थे।

गोपालगंज | हिन्दुस्तान

पर्यटकों को लुभा रही सीढ़ियों से टकराती नारायणी की लहरें

नारायणी रिवरफ्रंट

पार्क को किया जा रहा विकसित

जल संरक्षण पर भोजपुरी वीडियो गीत का लोकार्पण

जल संरक्षण जैसे गंभीर विषय को असान भाषा में समझाने की है कोशिश

जागरण संवाददाता, बक्सर: जिला पदाधिकारी अमन समीर के द्वारा नेहरू युवा केन्द्र व नमामि गंगे परियोजना के जिला परियोजना अधिकारी शैलेश कुमार राय द्वारा जल संरक्षण पर लिखित तथा मुकेश मोहक द्वारा गाए भोजपुरी गीत पर आधारित वीडियो को लोकार्पित किया गया।

जल संरक्षण मुहिम को ग्रामीण स्तर पर बढ़ावा देने हेतु स्थानीय भोजपुरी भाषा में तैयार गीत पर आधारित आकर्षक वीडियो को प्रदर्शित भी किया गया है। इस अवसर पर उपस्थित उप विकास आयुक्त डॉ. योगेश कुमार सागर ने इस गीत पर आधारित वीडियो को सराहनीय बताते हुए अपने उद्बोधन में जानकारी देते हुए बताया कि जिले के सभी प्रखण्डों में जल जीवन हरियाली कार्यक्रम सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया जा रहा है। साथ ही सरकार के सात निश्चय कार्यक्रम के तहत हर घर का नल का जल योजना के तहत पीने योग्य पानी की आपूर्ति नल के जरिए की जा रही है।

वीडियो के जरिए पानी की बर्बादी को रोकने हेतु संदेश आकर्षक ढंग से दिखाया गया है। जिला पदाधिकारी ने अपने उद्बोधन में इसे अच्छी पहल बताते हुए वीडियो बनाने पर बधाई भी दी।

उन्होंने इस तरह के प्रयास को लगातार करते रहने पर बल दिया। गीत, वीडियो को और प्रभावी बनाने हेतु स्थानीय भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करने की सलाह भी दी गई।

पीने योग्य पानी की कमी से पूरा विश्व जूझ रहा है, इसीलिए पीने योग्य पानी की बर्बादी को रोकने हेतु जन जागरूकता अभियान की सतत आवश्यकता है।

दामोदर नदी को साफ रखने का लिया गया संकल्प

फुसरो नगर परिषद की ओर से दामोदर तट पर आयोजित गंगा आरती कार्यक्रम उपस्थित लोग.

18 करोड़ की योजना से दामोदर को प्रदूषण मुक्त किया जाएगा

दस हजार जल तलैया बना दिया

जागरण विशेष

जल संरक्षण

अजय खंतवाल • कोटद्वार

"जब हम जल को जीवन देंगे, तभी हमें जल से जीवन मिलेगा', इन शब्दों ने उस आंदोलन को जन्म दिया, जिसने कई गांवों की किस्मत बदल दी। सच्चिदानंद भारती के नेतृत्व में शुरू हुए 'पाणी राखो' आंदोलन ने कलम सिंह नेगी के जीवन का मकसद ही बदल दिया। वह 20 वर्षों से क्षेत्र में जल संरक्षण की मुहिम चला रहे हैं। करीब दस हजार से अधिक जल तलैया बना चुके हैं।

1981 से 1990 के बीच एक समय ऐसा भी आया, जब पौड़ी जिले के उफरैंखाल (बीरोंखाल) क्षेत्र के विभिन्न गांवों में प्राकृतिक जलस्रोत सूखने लगे। नदियों का जल स्तर भी काफी घट गया। खेती पर इसका असर पड़ना ही था। ऐसे में गाडखर्क गांव के सच्चिदानंद भारती ने 'पाणी राखो' आंदोलन शुरू किया। 12वीं कक्षा के छात्र कलम सिंह उनके संपर्क में आए और फिर ग्राम भटबी मल्ला निवासी इस बालक की जीवन धारा ही बदल गई।

उन्होंने गैंती-फावड़ा उठाया और गांव से कुछ दूर फेडुलगाड (कुंदनपुर) में खेतों से लगे जंगल में जल तलैया (कढ़ाहीनुमा गड्ढे) खोदने शुरू किए। सीढ़ीनुमा खेत होने के कारण पहाड़ पर छोटे तलैया ही खोदे जा सकते हैं।

पौड़ी जिले में उफरैंखाल क्षेत्र स्थित भटबी मल्ला गांव में बनाई गई जल तलैया की सफाई में जुटे कलम सिंह। बाएं से दूसरे। और अन्य ग्रामीण • जागरण

जल का जागरण

जल बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। जिस तरह से इस अनमोल संसाधन की किल्लत बढ़ रही है, उसे देखते हुए हम सभी का फर्ज इसे सहेजने के प्रति बढ़ जाता है। इसी क्रम में दैनिक जागरण अपने जल संरक्षण सरोकार के तहत लोगों को जल सहेजने के लिए जागरूक कर रहा है।

उफरैंखाल क्षेत्र के गांवों में जल संरक्षण को लेकर ग्रामीण काफी जागरूक है। कलम सिंह समेत अन्य ग्रामीणों ने बड़ी संख्या में जल तलैया बनाकर पर्याप्त जल का संरक्षण किया है। — राजेंद्र प्रसाद ममगाईं, सामाजिक कार्यकर्ता

राजमिस्त्री का कार्य करते हैं कलम

ग्राम भटबी मल्ला निवासी कलम सिंह के पिता सालक सिंह नेगी राजमिस्त्री थे। कलम सिंह भी उनके साथ मकान बनाने जाया करते थे। दस वर्ष पूर्व पिता के निधन के बाद कलम सिंह ने राजमिस्त्री का कार्य अपना लिया और इसी से परिवार का पालन-पोषण कर रहे हैं।

स्कैन करें और पढ़ें 'सहेज लो, हर बूंद' अभियान की अन्य सामग्री।

माटी की चिंता | काशी प्रांत के कुल 700 किसान योजना का हिस्सा बने

धरती की सेहत सुधारने में जुटा गंगा समग्र

अमलेंदु त्रिपाठी • प्रयागराज

प्रयागराज मिट्टी के उपचार के बाद मोहरब गांव में खेत में पौधे लगाया जा रहे • सौ. गंगा समग्र

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के आनुषांगिक संगठन गंगा समग्र धरती की सेहत सुधारने में जुटा है। पहले चरण में काशी प्रांत के जिलों में गंगा तीरे पांच किलोमीटर के दायरे में आने वाले गांवों को योजना में शामिल किया गया है। किसानों को जैविक खेती के लिए प्रेरित किया जा रहा है, साथ ही चिह्नित किसानों के खेतों की मिट्टी को सुपोषित करने की कवायद शुरू कर दी गई है। अगस्त तक कार्य चलेगा। खेतों में गोबर, गोमूत्र, गुड़, बेसन के मिश्रण का छिड़काव कर माटी में जीवांश कार्बन की मात्रा व मित्र कीट की संख्या बढ़ाई जा रही है।

गंगा समग्र के प्रांतीय सह संयोजक चंद्रशेखर मिश्र बताते हैं कि फिलहाल कुल सात सौ किसान योजना का हिस्सा हैं। इनमें भी प्रयागराज के 200 किसान शामिल हैं। श्रृंगवेरपुर, हंडिया के आसेपुर, कौशांबी में टेवा व मंदरीपुर में मृदा सुपोषण के बाद फसल तैयार करने के लिए बीज डालने व पौधों के रोपण की प्रक्रिया शुरू होगी। अन्य किसानों को भी मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

मोटे अनाज के उत्पादन को बढ़ावा

मृदा की सेहत सुधारने के बाद उसमें औषधीय पौधे लगाए जाएंगे। खासकर अश्वगंधा, सतावर, कालमेघ, खस, लेमनग्रास की खेती होगी। मोटे अनाज की खेती को भी बढ़ावा दिया जाएगा। विशेष रूप से मक्का, अरहर, सरसों, सांवा, कोदो, ज्वार, बाजरा का उत्पादन बढ़ाने का लक्ष्य है। यदि किसान चाहेंगे तो वह पारंपरिक फसल धान, गेहूं ले सकते हैं। सब्जियों की पैदावार लेने में भी मदद की जाएगी।

जैविक खेती से किसानों को जोड़ने में सहयोग करने वाले कृषि विज्ञानी डा. हिमांशु द्विवेदी कहते हैं कि यदि फसल में किसी भी तरह के कीट लगते हैं तो उसका उपचार भी प्राकृतिक होगा। फसल पर सप्तपर्णी अर्क का छिड़काव किया जाएगा, जिसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होता।

योजना | आइआइटी के सहयोग से तैयार होगी प्लानिंग, अर्थ गंगा पर रहेगा केंद्र

गंगा की सहायक नदियों की सुधरेगी सेहत

जागरण संवाददाता, कानपुर : पतितपावनी की स्वच्छता, गुणवत्ता और सुचिता के लिए सहायक नदियों की सेहत सुधारी जाएगी। जिला स्तर पर योजना तैयार होगी। निचली नदियों से लेकर गंगा के मुहाने तक जरूरी कार्य किए जाएंगे। डाल्फिन की उपस्थिति के लिए सभी तरह के प्रयोग होंगे। गंगा के किनारे पर आर्थिक गतिविधियों को तेज किया जाएगा, जिससे किसानों और जरूरतमंदों को रोजगार मिल सकेगा। यह योजना गंगा रिवर बेसिन मैनेजमेंट

ये पांडु नदी है, जो काफी मैली हो चुकी है। इसे भी स्वच्छ किया जाएगा • फाइल फोटो

डाल्फिन को लाने की तैयारी

प्रो. तारे ने बताया कि नरौरा से ऊपर की ओर डाल्फिन है जबकि वाराणसी के नीचे भी और डाल्फिन देखी गई है। कन्नौज, कानपुर, फतेहपुर, प्रयागराज में न के बराबर है। कई बार डाल्फिन गंगा बैराज के दूसरी ओर नजर आई थी। इसका शोध वाईल्ड लाइफ और अन्य विभागों के साथ मिलकर किया गया है। डाल्फिन यमुना में न के बराबर है

उत्तर प्रदेश

निर्मल गंगा के लिए

बिहार सीमा से सटे फौजी भाइयों की बाहुल्यता वाले गांव गहमर का संकल्प गांगेय प्रदेश के गांव-गांव तक गूंजना चाहिए

CONTINUOUS LEARNING AND ACTIVITY PORTAL (CLAP) FOR GANGA – *A PEOPLE RIVER CONNECT INITIATIVE*

People-river connect and public participation with ongoing efforts on Ganga rejuvenation is one of the important pillars of Namami Gange Program. Public support and involvement of the public at large is important for the success of any ecological program more so for a river restoration initiative. The Government, the Private sector and the people specially children and youth have to come together to make the river rejuvenation program sustainable and for improving people river connect through innovative projects and activities

CLAP is envisioned to function as a single platform for all interested people on environment and rivers. It will keep the children and youth engaged through various games, quizzes, contests; enable them to search and get knowledge on all related topics; enhance the people - river connect through showcasing the historical and cultural importance of the river; also promote action through connecting interested youth and children to various volunteering opportunities by different agencies.

CLAP is a learning portal that will be buzzing with activities, quizzes, crosswords, discussion forums to keep children engaged throughout the year. The objective of all the activities will be to sensitize and motivate the children and youth for action to protect and restore our rivers. It will also serve as a central platform to showcase all national and international experiences for river rejuvenation.

CLAP will be one of its kind effort not only nationally but also internationally. There has been development of some websites or tools aimed at engaging school children and teachers but none so comprehensive that aims at sensitizing and mobilizing children and youth at the same time. CLAP is planned to be much larger and overarching; with activities that sensitizes children and youth on various aspects of river, connect them to the possibilities to act, and also provide opportunities to showcase and advocate.

Need to CLAP for Ganga

- It is a central platform that connects the youth to the Namami Gange Initiative.
- Through CLAP, the interest young people have towards rivers, can be kept alive via continuous interactions and regular activities.
- It will be a knowledge portal to engage and motivate people.
- CLAP portal will honour and showcase people for their special contributions in environment and river restoration.
- This is a way to nurture and empower the upcoming generation by sensitizing them along with building their capacity to own and take responsibility for their environment and rivers.
- Through this platform, the youth can also find links for jobs, internships and contracts that will be integrated into the platform.

The features of the Continuous Learning and Activity Portal (CLAP)

The CLAP for Ganga Portal is a learning portal that will buzz with activities, quizzes, crosswords and discussion forums to keep children and youth engaged throughout the year. The objective of all the activities will be to sensitize and motivate the children and youth towards action for the protection and restoration of our rivers. It will also serve as a central platform to showcase all national and international experiences for river rejuvenation, while action will be promoted by connecting interested youth and children to various volunteering opportunities by different agencies.

EXPECTED OUTCOMES

- A central platform will be created to connect children, youth, schools, and institutions for the cause of environment and rivers.
- Converting at least 50% of Ganga Quest participants to active followers of CLAP
- Improved people-river connect and empowered generation to own up their environment, water, and rivers.

With this portal, we intend to connect **500,000 users** in Phase One, **1,500,000 users** in Phase Two, and **2,500,000 users** in Phase Three with Namami Gange by 2023!

आपका प्यार... आपके सुझाव...

नमामि गंगे पत्रिका लोगों से जुड़ने का सबसे बड़ा साधन है। ये वैचारिक परिस्थितिकीय पहलुओं के अलावा ज्ञान चेतनाओ को गंगा के प्रति जगाने का केंद्र भी है। मैं व्यक्तिगत रूप से इस तरह की जन पत्रिकाओं का पक्षधर हूँ। जो सबको जोड़कर एक सामूहिक केंद्र को जन्म देते हैं।

पद्मभूषण
डॉ. अनिल प्रकाश जोशी
(संस्थापक हेस्को)

नमामि गंगे पत्रिका का हर अंक काफी रोचक, वैज्ञानिक तथ्यों से भरा हुआ रहता है। आम जन मानस में नमामि गंगे के गंगा नदी बेसिन पुनरुद्धार कार्यक्रम की जानकारी बड़े ही सहज रूप से मिलती है। मैं भी गंगा के पुनरुद्धार कार्यक्रम से सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ हूं। मैं आशा करता हूं कि मुझे आगे भी पत्रिका का हर अंक मेरे ज्ञान वर्धन में सहायक होगा।

डॉ. विशाल सिंह,
वैज्ञानिक (स),
राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान,
रुड़की, उत्तराखंड

This is a big step from India's side. Because the pond and river have to be saved from pollution. Today there is so much pollution in the world that various types of diseases are arising. Due to which the human race is being affected very badly.

Boby kumar
Star Rating : 5

It is indeed a great pleasure to see NMCG 23 rd Magazine and came to know the activities of the Mission. Message of President of India and DG-Editorial is very impressive. The enrolment of Ganga Prahari, Ganga Doot and Ganga Mitra is quite appreciable and laudable. I am of the view that widen this base and enrol more such volunteers every year. Despite jolted by Pandemic the whole team of NMCG has shown a real comeback and true spirit towards the carrying the mission of NMCG ahead. The featuring of Summer Interns of various Universities in the magazine shows clear goal of Ganga which accepts everything from small to big without ignoring a smallest thing. The inclusion of such interns in the magazine depicts the true Motto of Pious River Ganga which Almighty has given to Human kind especially on the Land of INDIA. Jai Ma Ganga, Jai Hind.

Dr Anant D Dubey
Cabinet Secretariat
Govt of India
New Delhi

I would like to warmly commend and compliment DG, NMCG and all those who are associated with bringing out the Newsletter for doing an excellent job. If the Clean Ganga Mission is to succeed, it is imperative to make it into a mass movement. It is essential to bring the issue out of the confines of the corridors of government offices and make people as active stake-holders in this venture. This is exactly what the E-patrika seeks to do and in my view succeeds admirably. The Newsletter is not only pleasant to the eye and is user friendly but also contains a wealth of information. Inclusion of several pictures and photos of events organized by NMCG is an added bonus which makes the E-patrika extremely user friendly. If possible, the size of the font of letters could be increased. Even with the magnified size, it becomes somewhat taxing on the eye to read the text.

I wish success to the management and leadership of NMCG for fully realizing and achieving this important, national objective.If possible, I would like to receive hard copies of the Newsletter at my Address given below.

Ambassador Ashok Sajjanhar,
President,
Institute of Global Studies,
146 IFS Villas, Builder's Area,
Greater Noida,
UP-201310

Excellent Information and very informative. Thank you NMCG

Dipendra Mani, DPO
Patna
Star Rating : 5

From this news we will learn about Ganges River biodiversity Ganges Benefits etc and it will play a special role for Awareness.

Sujit Bhandari
Star Rating : 5

Up to date, to the point, well discussed, well analysed, well presented to its readers. Congratulations.

Mitul Kansal
Star Rating : 5

The selection of the cover pictures is superb. Thanks to the editorial team of Namami Gange Magazine.

Dr Rishikesh Singh
Star Rating : 5

A wonderful initiative by team NMCG. Magazine gives an insight about the plans and progress of various projects. One can get Information about various movements done to encourage people to save their rivers and how to be a part of the movement of saving our rivers. I hope that other missions get inspiration from NMCG and start something similar. On other hand I feel that team can make it more entertaining by adding some crossword puzzle, word game or a board game for adults and kids which has indirect and direct connection with our rivers. Once again kudos to the in charge and the team for their efforts. Can't wait to see the next edition.

Meenakshi Payal
Star Rating : 5

This is a big step from India's side. Because the pond and river have to be saved from pollution. Today there is so much pollution in the world that various types of diseases are arising. Due to which the human race is being affected very badly.

Boby kumar
Star Rating : 5

Good initiative

Akanksha Srivastava
Star Rating : 5

Har Har gange, Epatrika and Ganga Quest is very very helpful for me nowdays my knowledge about ganga is very excellent.

Ayush Prasad

You are doing a phenomenal job. Keep up the great work.

Ashok Sajjanhar
Star Rating : 5

आप अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया हमें नीचे दिए लिंक पर या क्यूआर कोड के जरिए हमसे साझा कर सकते हैं:

https://nmcg.nic.in/ebookFeedback.aspx

सत्यमेव जयते

NATIONAL MISSION FOR CLEAN GANGA

Ministry of Jal Shakti, Department of WR RD & GR, Government of India

1st Floor, Major Dhyan Chand National Stadium, India Gate, New Delhi-110002

Telephone: +91-011-23072900-901 | Fax: +91-011-23049568

E-mail ID: admn@nmcg.nic.in

For Feedback write to us at editorialboard@nmcg.nic.in

Follow us on

www.nmcg.nic.in | @cleanganganmcg | @cleanganganmcg | @namamigange

Jaina Offset Printers: 9873149889, 9811269844